मैं भारत हूँ

भारतीय सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक भावना को प्रेरित करती पत्रिका

वर्ष-१२, अंक-०९ दिसंबर २०२२ मुम्बई सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ४० मूल्य १००.०० रूपए

सूरत भाग २

(Regd.No. NTC/GI12745)

FOSTTA

'सूरत' शहर के ऐतिहासिक प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Federation of Surat Textile Traders Association

S-5046, J.J. A/c. Textile Market, Ring Road,
Surat, Gujarat, Bharat- 395 002
Ph.: 0261-3006709, 6670709 | Fax: 0261-2806709
fostta84@gmail.com www.fostta.com

Remove INDIA Name From the Constitution INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए INDIA नहीं

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

जरूर देखें : http://www.mainbharathun.co.in नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ

जैन समाज एकत्र हो यह है हमारा नारा
इसके लिए चाहिए मात्र आप ही का सहारा

मै भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

पंजीकृत कार्यालय

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९
दूरध्वनि: ०२२-२८५० ९९९९ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना : www.jinagam.co.in

मै भारत हूँ
mailgaylordgroup@gmail.com

भाजपा कोषाध्यक्षों ने कहा कि

भारत को केवल भारत ही बोलना चाहिए India हम क्यों बोलें?

नयी दिल्ली: भारतीय जनता पार्टी दिल्ली स्थित राष्ट्रीय कार्यालय में राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष रमेश अग्रवाला के निर्देशन में भारत के सभी प्रांतों के कोषाध्यक्ष व सह कोषाध्यक्ष की सभा हुई और सामूहिक भोजन का भी आयोजन किया गया था। सामूहिक भोजन के मध्य 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' की टीम ने कई कोषाध्यक्षों से शिष्टाचार मुलाकात की और पूछा कि चल रहे अभियान 'भारत को २ संवेधानिक नामों से क्यों पुकारा जाता है भारत और INDIA, उपस्थित सभी भारत माँ के लाडलों ने कहा कि हम तो बिल्कुल नहीं चाहते कि हमारे देश का नाम INDIA रहे। हमारे देश का नाम तो प्राचीन काल से 'भारत' ही था और BHARAT ही रहना चाहिए। बातचीत व समन्वय के बीच जम्मू-कश्मीर के कोषाध्यक्ष प्रभात सिंग जामवाल, गुजरात से सुरिंदर पटेल, तामिलनाडु से एस.आर. शेखर, सिक्कीम से दिलाप जैसवाल आदि-आदि ने राष्ट्रीय अभियान की सफलता के लिए शुभकामनाएं दी।

भारत का एक राज्य महाराष्ट्र के सांसद भारतीय कांग्रेसी सांसद बालूभाऊ सुरेश नारायण धानोरकर से उनके निवास स्थल दिल्ली स्थित साउथ एवेन्यु में दिए गए समयानुसार १५ दिसंबर २०२२ को ही सुबह १० बजे शिष्टाचार मुलाकात हुयी, तो उन्होंने अभियान के बारे में बहुत ही शांति से सुना और कहा कि BHARAT और INDIA दो नाम, जब किसी इंसान के नाम २ नहीं होते तो हमारे देश को हम २ नामों से क्यों पुकारें BHARAT और INDIA. आपलोगों की बहुत ही अच्छी सोच है, विश्वास दिलाता हूँ आप सभी एक दिन जरूर सफल होंगे, आखिरकार होंगे भी क्यों नहीं, कौन चाहेगा कि उसके माँ के नाम २ हों, 'भारत' तो १३० करोड़ की माता है, बहुत ही अच्छी सोच को साथ लेकर आप लोग चल पड़े हैं।

'भारत को BHARAT ही बोला जाए INDIA नहीं' अभियान जरूर सफल होगा, संविधान से INDIA नाम विलुप्त हो कर रहेगा। आपलोगों के द्वारा दी गई याचिका को सोमवार यानी १९ दिसम्बर २०२२ को जरूर लगेगी, साथ ही आप सभी का महाराष्ट्र की पावन भूमि मेरे संसदीय क्षेत्र चंद्रपूर, महाराष्ट्र के नागरिकों की तरफ से हार्दिक अभिनंदन करता हूँ और भारत माँ से भी निवेदन करता हूँ आपलोगों को इतनी शक्ति प्रदान करे ताकि विश्व के मानचित्र (Globe) में INDIA की जगह BHARAT लिखा जा सके। जय भारत!

भारत का एक राज्य राजस्थान का एक जिला 'राजसमंद' के सांसद दिया कुमारी जी के दिए गए समयानुसार हम दिल्ली स्थित उनके कार्यालय रविंद्र नगर पहुंचे, पर चल रहे संसद की कुछ जिम्मेदारी के कारण दिया कुमारी जी से साक्षात मुलाकात तो नहीं हो सकी पर उनके सहयोगी श्रेयांस शर्मा जी ने कहा कि हम माफी चाहते हैं कि अकस्मात सांसद महोदया दिया जी को संसदीय कार्य के लिए निकलना पड़ा, पर कोई बात नहीं आपके द्वारा दी गई याचिका को उन्हें जरूर दे दूंगा, साथ ही आपने जो बातें मुझे कही हैं वह भी उन्हें बता दूंगा, बाकी अभियान अच्छा है। जय भारत!

अगला विशेषांक जनवरी २०२३

नववर्ष विशेषांक

Tariff Card

Monthly Magazine
Main Bharat Hun

Reader Ship
17,000

Readers
Politician /

Release Date
21th day of Every Month

Magazine Size
A4

Print Area
19 cm x 24 cm

Print in Colour
Art Paper/Card

विज्ञापन दर 1st November 2018

ADVERTISEMENT RATE

Front Cover (With Photo/Sponsorship) Size : 185 x 225 mm	55,000/-*	+ 5% GST
Front Page (Cover Inside) Size : 185 x 225 mm	33,000/-*	+ 5% GST
Back Page (Cover) Size : 185 x 225 mm	35,000/-*	+ 5% GST
Back Page (Inside Cover) Size : 185 x 225 mm	31,000/-*	+ 5% GST
Opening of Magazine/3rd Page Size : 185 x 225 mm	32,000/-*	+ 5% GST
Centre Page Size : 185 x 225 mm	40,000/-*	+ 5% GST
Special Position on Editorial Page (if available) Quarter Page / Strip) Size : 185 x 50 mm	8,000/-*	+ 5% GST
Full Page (Inside) Size : 185 x 225 mm	22,000/-*	+ 5% GST
Half Page Size : 185 x 110 mm	12,000/-*	+ 5% GST
Quarter Page Size : 90 x 110 mm	6,000/-*	+ 5% GST

*** Per Insertion**

हिंदी भाषा शताब्दियों से राष्ट्रीय एकता का माध्यम है- बिजय कुमार जैन

भाजपा कोषाध्यक्षा ने कहा कि

भारत को केवल भारत ही बोलना चाहिए India हम क्यों बोलें

नई दिल्ली- ओडिशा का एक संसदीय क्षेत्र से भाजपा सांसद बसंता कुमार पांडा ने १५ दिसम्बर २०२२ को हुयी उनके निवास स्थल साउथ एवेन्यु में शिष्टाचार मुलाकात में उन्होंने कहा कि बिजय जी! एक-दो दिनों में ही लोकसभा के शुन्यकाल में आपके द्वारा दी गयी याचिका को हम लगा रहे हैं। बहुत ही अच्छी सोच व अभियान है यह कि 'भारत को BHARAT ही बोला जाना चाहिए INDIA नाम तो गुलामी का प्रतिक है, भारत के पंत प्रधान नरेंद्र मोदी जी भी अपने भाषण की शुरूआत में 'भारत माता की जय' ही बोलते हैं। विश्वास दिलाते हैं 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' का यह अभियान 'भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए' जरूर सफल होगा और एक दिन विश्व के मानचित्र (Globe) में जहाँ INDIA लिखा हुआ है वहाँ BHARAT ही लिखा जाएगा। जय भारत!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष बिजय कुमार जैन, राष्ट्रीय कोषाध्यक्षा निशा लड्ढा कोलकाता निवासी के साथ दिल्ली के आर.के. पुरम प्रभारी सरला जैन सांसद जुगल किशोर जी को याचिका सौंपते हुए जो कि संसदीय शीतकालीन सत्र में शून्य काल में लगायी जाये।

भारत का एक राज्य अतिसुंदर प्राकृतिकता की धनी जम्मू-काश्मीर के सांसद जुगल किशोर शर्मा से उनके दिल्ली स्थित निवास स्थल पर १५ दिसम्बर २०२२ पर उनके दिए गए समयानुसार मुलाकात हुयी, वैसे कुछ देर भी हो गयी थी, आदरणीय सांसद जुगल जी को शीत कालीन संसद सत्र में जो जाना था, फिर भी उन्होंने हमें समय दिया, सारे अभियान को समझा और कहा कि आपलोगों के द्वारा दी गयी याचिका तो आज-कल में ही लग जाएगी, लेकिन यह बताएं आप लोग कितने वर्षों से अभियान चला रहे है?

सांसद जुगल जी को हमने बताया कि १३ वर्षों पहले एक पत्रिका 'मैं भारत हूँ' प्रकाशन के साथ शुरू हुआ था यह अभियान, जो आज वटवृक्ष का रूप ले चुका है, सफलता अब जरूर मिलेगी, क्योंकि भारतीय जनता पार्टी जम्मू-काश्मीर से सांसद जुगल जी का समर्थन जो इस राष्ट्रीय अभियान को प्राप्त हो गया है।

सांसद जुगल जी ने बड़े ही जोश भरे स्वर में कहा कि मैं क्या एक दिन पूरा देश आपके साथ होगा, पिछे नहीं हटना आपलोग, सफलता मिलकर ही रहेगी।

सांसद जुगल जी के साथ हमने कश्मीरी चाय व स्वाद भरे कश्मीरी लड्डू का लुफ्त भी उठाया।

सांसद जुगल जी ने कहा कि बहुत ही जल्द जम्मू काश्मीर में एक विशाल कार्यक्रम का आयोजन किया जाये, ताकि जम्मू काश्मीर की माटी से उठी आवाज से १३० करोड़ भारतीय जागृत होंगे ताकि विश्व एक न एक दिन हमारे देश को केवल BHARAT ही बोले। जय भारत!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन के दिल्ली आर.के. पूरम प्रभारी सरला जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष बिजय कुमार जैन, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष निशा लड्ढा राजस्थान स्थित झुंझुनूं के सांसद नरेंद्र कुमार जी से शीतकालीन सत्र में याचिका लगाने हेतु निवेदन ताकि भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए INDIA नहीं

भारत का एक राज्य राजस्थान का एक जिला 'झुंझुनूं' के झुंझारु भारतीय जनता पार्टी के सांसद से उनके नयी दिल्ली निवास स्थल पर १५ दिसम्बर २०२२ की सुबह १० बजे मुलाकात हुयी तो सांसद नरेंद्र जी ने कहा कि 'भारत' नाम बोलने से ही सीना गर्व से भर जाता है INDIA नाम तो पूरी तरह से गुलामी का ही प्रतीक है।

राजस्थान की माटी शौर्य व प्रतापों की भूमि है, जब हमारे पूर्वजों ने हमारी माटी की सुरक्षा के लिए जॉ की बाज़ी तक लगा दी, भारत मॉ की आजादी के लिए लाखों लोग अंग्रेजों के दानवी व्यवहार के शिकार भी हुए फिर आज हम अंग्रेजों द्वारा थोपा गया नाम INDIA को क्यों बोले, सुनें या लिखें।

मुझे २ दिन का समय दिजिए, आप लोगों के द्वारा दी गई याचिका शुन्य-काल में लगेगी, आप लोगों से निवेदन करता हूँ कि और भी सांसदों से मिलें ताकि संसद में सभी का समर्थन मिले और विश्व के मानचित्र (Globe) में जहॉ INDIA लिखा हुआ है वहॉ पर हमारे देश का नाम 'भारत' लिखा जाए। मैं आप सभी का मेरे संसदीय क्षेत्र के निवासियों की तरफ अभिनंदन करता हूँ, बहुत ही अच्छी सोच व अच्छा कार्य है। जय भारत!

हमारे देश की पहचान है हिंदी और हमारा अभिमान है हिंदी-बिजय कुमार जैन

मैं भारत हूँ

वर्ष -१२, अंक ०९, दिसम्बर २०२२

वार्षिक मुल्य
रु.१११११/-
१२ अंकों का

सम्पादक - बिजय कुमार जैन

वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए
का आव्हान करने वाला भारत माँ लाडला

उपसंपादक - संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)

- 'मैं भारत हूँ' में प्रकाशित लेखों/ कविताओं/समाचारों/ विज्ञापनों से पूर्ण सहमत होना सम्भव नहीं है।
- 'मैं भारत हूँ' से सम्बन्धित समस्त विवादों के लिये न्याय क्षेत्र अंधेरी, मुम्बई ही मान्य माना जायेगा।

सम्पादकीय मुख्य कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र,
भारत - ४०० ०५९
दूरभाष :- ०२२-२८५० ९९९९
अणु डाक :- mailgaylordgroup@gmail.com
अन्तरताना:- www.mainbharathun.co.in

कृपया विज्ञापन बिल की राशि का भुगतान
नीचे दिये गए बैंकों में जमा करा सकते हैं

HDFC Bank
Andheri East Branch
RTGS / NEFT
IFSC: HDFC 0000592.
Account No.05922320003410

State Bank Of India
(01594) Marol Mumbai Branch.
IFS Code :SBIN0001594.
Account No. 030338727406.
in the name of GAYLORD PUBLICATIONS PVT.LTD.
Payment Transfer & Inform to us on: 9322307908

सम्पादकीय ....

चला है तू अकेला एक दिन पूरा भारत साथ होगा
-भारतीय सांसद

१३ दिसंबर से १५ दिसंबर २०२२, तीन दिन, भारतीय संसद के शीतकालीन सत्र में भारतीय सांसदों से शिष्टाचार मुलाकात, दिल्ली के विभिन्न स्थानों पर निवासित सांसदों से निवेदन किया गया कि शून्यकाल में निवेदित याचिका आपके द्वारा लगाकर चर्चा-परिचर्चा करवाई जाए ताकि भारतीय लोकसभा व राज्यसभा के सभी भारत माँ के लाडलों द्वारा समर्थन मिले और विश्व के मानचित्र (Globe) में जहां पर हमारे देश का India लिखा हुआ है वहां Bharat लिखा जा सके।

बता दूं कि अभी तक 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' अंतर्राष्ट्रीय संस्थान द्वारा ११० लोकसभा के, १७ राज्यसभा के सांसदों को याचिका भेजी है और १२ सांसदों से निजी तौर पर भेंटवार्ता कर निवेदन भी किया, सभी ने यह ही कहा कि देश का नाम तो केवल Bharat ही रहना चाहिए, चाहे भाषा कोई भी हो, हम अपने देश को हिंदी में भारत और अंग्रेजी में India नाम से क्यों बुलाते हैं? यह आज तक हमें भी समझ में नहीं आया?

भारत माँ के लाडले सांसदों ने यहां तक कह दिया कि यह अभियान तो बहुत ही पहले शुरू होना चाहिए था पर कोई बात नहीं बिजय जी! आपने शुरू किया है, आज आप अकेले हैं एक दिन पूरा देश आपके साथ होगा...

बस इतना ही कह सकता हूं कि हम सभी भारत मां के कृतग्न हैं, 'भारत माता की ही जय' बोलते हैं, आज तक मैंने India माता या हिंदुस्तान माता की जय नहीं सुना है और ना ही सुनना चाहता हूं। भारत मेरी माँ है, हम सब की मां है, हम सभी भारतवासियों को मिलकर विश्व में भारत माँ के नाम को सम्मान दिलवाना है ताकि भारत माँ विश्व को कह सके कि 'मैं भारत हूँ' और इसके लिए हमें विश्व के मानचित्र (Globe) में जहां पर अपने देश का नाम India लिखा हुआ है वहां पर Bharat लिखवाना होगा।

प्रस्तुत अंक सूरत वासियों के लिए भी पठनीय रहेगा ऐसा मुझे विश्वास है। विश्वविख्यात पत्रिका 'मैं भारत हूँ' का अगला अंक २०२३ के स्वागत के साथ होगा। जय भारत!

जय भारत!
जय भारतीय संस्कृति!

राष्ट्र की परिभाषा
भाव-भूमि-भाषा

आपका अपना
बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को भारत कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय

जन-जन की आशा है हिंदी, भारत की भाषा है हिंदी-बिजय कुमार जैन

जय भारत! जय भारत! जय भारत!

भारत का एक राज्य मध्य प्रदेश की आर्थिक राजधानी इंदौर से भारतीय जनता पार्टी के झुझारू सांसद शंकर लालवानी जी के दिल्ली निवास स्थल हुमायूं रोड पर जब हम यानी मैं बिजय कुमार जैन वरिष्ठ पत्रकार व संपादक राष्ट्रीय अध्यक्ष 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन', राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष निशा लड्ढा कोलकाता निवासी व दिल्ली से आर के पुरम प्रभारी सरला

जैन के साथ १४ दिसंबर २०२२ की दोपहर २:०० बजे एक शिष्टाचार मुलाकात में सांसद शंकर लालवानी जी ने पूछा कि बिजय जी! हमारे देश का नाम हिंदुस्तान, इंडिया के बारे में मुझे संक्षिप्त में बताइए, साथ ही हमारे देश का नाम 'भारत' ही क्यों होना चाहिए,जब उन्हें समुचित जानकारी मैंने दी तो श्री लालवानी जी ने कहा कि सुंदर सोच है, आज भारत को कहना पड़ रहा है कि 'मैं भारत हूँ' २ दिनों में ही लोकसभा में याचिका लग जाएगी जो आप लोगों ने मुझे प्रत्यक्ष रूप में दी है। मैं समर्थन करता हूं कि 'भारत को केवल BHARAT ही बोला जाना चाहिए INDIA तो कदापि नहीं'। बहुत ही ऐतिहासिक कार्य कर रहे हैं आपलोग, मेरी तरफ से आपलोगों का बहुत-बहुत हार्दिक अभिनंदन। जय भारत!

-बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए
का आव्हान करने वाला भारत माँ लाडला

जय भारत! जय भारत! जय भारत!

भारत का एक राज्य उड़ीसा का एक संसदीय क्षेत्र 'बालासोर' के सुलझे हुए कर्मठ सांसद प्रताप चंद्र षाड़ंगी ने अपने निवास स्थल हुमायूं रोड में १४ दिसंबर २०२२ की दोपहर २:३० बजे एक शिष्टाचार मुलाकात में कहा कि बिजय कुमार जी! मैं तो इस अभियान को जानता भी हूं, और समर्थक भी हूं। आप मुझे याचिका दे दीजिए, मैं १-२ दिन में ही लोकसभा की शून्य काल में लगाने का प्रयास करूंगा। शिष्टाचार मुलाकात में मेरे साथ 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' की राष्ट्रीय कोषाध्यक्षा निशा लड्ढा कोलकाता निवासी के साथ दिल्ली आर के पुरम प्रभारी सरला जैन भी उपस्थित थी। जय भारत!

-बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए
का आव्हान करने वाला भारत माँ लाडला

'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' की राष्ट्रीय महामंत्री शोभा सादानी ने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के वरिष्ठ कार्यकर्ता राजेश जी लोया से उनके निवास स्थल नागपुर में सदिच्छा भेंट दी और कहा कि 'भारत को केवल Bharat ही बोला जाए INDIA नहीं' अभियान आज विश्व स्तर का बन चुका है इसमें आपका साथ, सहयोग और मार्गदर्शन प्राप्त हो, ऐसा निवेदन हम भारतीय आपसे करते हैं, यदि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का सहयोग हमें प्राप्त होगा तो विश्वास दिलाते हैं कि विश्व के मानचित्र में जहां पर हमारे देश का नाम INDIA लिखा है वहां पर BHARAT लिखा जा सकेगा। जय भारत!

देवनागरी भारतीय भाषाओं के लिए सर्वोत्तम लिपि है - बिजय कुमार जैन

तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय में 'जय भारत' का नारा गूंजा

मोरादाबादः कहते हैं जब-जब जो-जो होता है, तब-तब सो-सो होता है। १२ दिसंबर २०२२ वार सोमवार को जब हम (बिजय कुमार जैन वरिष्ठ पत्रकार व संपादक, राष्ट्रीय अध्यक्ष मैं भारत हूँ फाउंडेशन, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष निशा लड्ढा कोलकाता निवासी, जिनेश जैन दिल्ली रोहिणी प्रभारी, सरला जैन आर.के. पूरम प्रभारी मिलकर सुबह १०.३० बजे दिल्ली एयरपोर्ट टर्मिनल २ से रवाना हुए और ठीक दोपहर १.३० बजे भारत का एक राज्य उत्तर प्रदेश का एक संसदीय क्षेत्र मुरादाबाद पहुंच गए, कारण यह था कि दोपहर २ बजे तीर्थंकर महावीर युनिवर्सिटी (TMU) संस्थान के चैयरमेन व कुलाधिपति भारत मॉ के लाडले सुरेश जैन ने विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं के साथ प्रांगण में ही स्थापित विशाल सभागार में 'भारत को Bharat ही बोला जाए India नहीं' चर्चा परिचर्चा कार्यक्रम का आयोजन किया था, हम-सबके साथ मुरादाबाद निवासी प्रसिद्ध साहित्यकर महेश दिवाकर के साथ विश्वविद्यालय के रवि जैन भी मंचासीन थे।

कार्यक्रम में जब छात्र-छात्राओं को 'भारत' के इतिहास की संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत की गयी तो तालियों की गड़गड़ाहट से 'जय भारत' के नारे से सभागार गुंजायमान हो गया।

उपस्थित सभी छात्र-छात्राओं ने कार्यक्रम के अंतिम में प्रतिज्ञा ली, कि आज व अभी से हम जब भी किसी का अभिवादन करेंगे 'जय भारत' से ही करेंगे और अपने मित्रों व परिवार के सगे-संबंधियों से भी निवेदन करेंगे कि वे भी 'जय भारत' ही बोलें।

- गेलॉर्ड ग्रुप

भारत की मानसिक उन्नति भली-भाँति तभी हो सकती है, जय शिक्षा का माध्यम 'हिन्दी' हो - पं. रामनारायण मिश्र

जय भारत! जय भारत! जय भारत!

भारत का एक राज्य झारखंड का एक संसदीय क्षेत्र गिरिडीह के सांसद चंद्र प्रकाश चौधरी, जो कि एकमात्र सांसद ऑल झारखंड स्टूडेंट्स यूनियन राजनीतिक दल से हैं, जब हम सभी यानी मेरे साथ (बिजय कुमार जैन, वरिष्ठ पत्रकार व संपादक, राष्ट्रीय अध्यक्ष 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' मुंबई निवासी) राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्रीमती निशा लड्ढा कोलकाता निवासी मिलकर सांसद महोदय के निवास स्थल नॉर्थ एवेन्यू में १३ दिसंबर २०२२ को संध्या ६:०० बजे, उनके दिए गए समय के अनुसार मिलने गए तो सांसद चंद्रप्रकाश चौधरी जी ने कहा कि मेरी आपसे कई बार बात हुई है, इस विषय में कि 'भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए INDIA नहीं', बहुत ही अच्छा लगा, मेरी पार्टी से मैं पूरे भारतवर्ष में अकेला सांसद हूं और विश्वास भी दिलाता हूं कि जल्द ही संसद में इस अभियान को शून्य काल में उठाऊंगा और मुझे विश्वास भी है कि इस राष्ट्रीय अभियान का कोई विरोध नहीं करेगा, क्योंकि १३० करोड़ की मां भारत भी चाहती है कि मुझे केवल 'भारत' ही कहा जाए और आने वाले समय में विश्व के मानचित्र में जहां पर INDIA लिखा हुआ है वहां पर केवल BHARAT लिखा जाएगा। मैं आपलोगों का हार्दिक अभिनंदन भी करता हूं साथ ही धन्यवाद भी देता हूं और माँ भारती से निवेदन करता हूं कि आप सभी का सपना पूरा हो और भारत को केवल BHARAT ही कहा जा सके। जय भारत!

-बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए
का आव्हान करने वाला भारत माँ लाडला

जय भारत! जय भारत! जय भारत!

राजस्थान उदयपुर से भारतीय जनता पार्टी के सांसद अर्जुन लाल मीणा चुनाव लड़ कर अपने प्रतिद्वंदी को हरा कर भारतीय लोकसभा के सदस्य बनकर अपने कार्यकाल में अपने क्षेत्र के कई मुद्दों को संसद में उठाया और लोगों को राहत दिलाई।

दिनांक १३ दिसंबर २०२२ को जब मैं, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' के श्रीमती निशा लड्ढा कोलकाता निवासी व दिल्ली रोहिणी प्रभारी जिनेश जैन के साथ उनके निवास स्थान दिल्ली स्थित १०२, नर्मदा अपार्टमेंट में हम पहुंचे तो उन्होंने कहा कि बिजय जी! मैं तो इस अभियान 'भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए INDIA नहीं' को लोकसभा में उठाऊंगा ही, साथ ही अपने दोस्तों (लोकसभा सदस्यों) को भी निवेदन करूंगा ताकि वे सभी इस अभियान को लोकसभा में उठाएं ताकि विश्व को हमारी माँ भारती कह सके कि 'मैं भारत हूँ'।

बिजय जी! आपलोग बहुत ही अच्छा कार्य कर रहे हैं जिसके लिए मेरे द्वारा व मेरे क्षेत्र लोकसभा के मतदाताओं की तरफ से आप लोगों का हार्दिक अभिनंदन! जय भारत!

-बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए
का आव्हान करने वाला भारत माँ लाडला

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

हिंदी भाषा शताब्दियों से राष्ट्रीय एकता का माध्यम है- बिजय कुमार जैन

जय भारत! जय भारत! जय भारत!

डॉ किरोड़ी लाल मीणा भारतीय जनता पार्टी से भारतीय राज्यसभा के सांसद से १३ दिसंबर २०२२ को उनके पंडारा निवास में हम सभी यानी मेरे साथ राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष मैं भारत हूँ फाउंडेशन की श्रीमती निशा लड्ढा कोलकाता निवासी, दिल्ली रोहिणी प्रभारी जिनेश जैन दिए गए समय के अनुसार उनसे मिलने गए तो उन्होंने कहा कि 'भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए INDIA नहीं', यह मात्र अभियान नहीं 'भारत' का सम्मान है, यह होना ही चाहिए INDIA नाम का मतलब ही क्या है? मुझे संपूर्ण विवरण बताइए कि INDIA का नाम कब से, क्यों पड़ा, हिंदुस्तान नाम कहां से आया? जब सभी जानकारियां आदरणीय सांसद मीणा जी को बताई गई तो उन्होंने कहा कि आप मेरे सहयोगी सतीश गुप्ता को संपूर्ण जानकारी लिखित में दे दें, ताकि मैं राज्यसभा में इस अभियान की चर्चा कर सकूं और सभी सांसदों के सहयोग से भारत माँ को विश्व में सम्मान दिला सकूं साथ ही विश्व के मानचित्र में जहां इंडिया लिखा गया है उसकी जगह BHARAT लिखवा सकूं। मैं आप सभी लोगों का हार्दिक अभिनंदन करता हूं और आप सभी से कहता हूं कि आप सभी राष्ट्रहित कार्य कर रहे हैं,वर्तमान की सरकार भी यही चाहती है कि 'भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए', 'One Nation One Name'!

-बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए
का आव्हान करने वाला भारत माँ लाडला

जय भारत! जय भारत! जय भारत!

भारतीय जनता पार्टी के सांसद चुन्नीलाल साहू भारत का एक राज्य छत्तीसगढ़ के एक लोकसभा क्षेत्र में अपने निकटतम प्रत्याशी को हराकर भारत के लोकसभा में पहुंचे। सांसद चुन्नीलाल जी से उनके दिए गए समय के अनुसार हमारी जब मुलाकात हुई तो उन्होंने कहा बिजय जी! मेरा सबसे बड़ा उद्देश्य है कि मैं अपने क्षेत्र के रहवासियों को सारी सुविधाएं प्रदान कर सकूं क्योंकि भारत का सबसे बड़ा लोकसभा संसदीय क्षेत्र मेरा है, छत्तीसगढ़ और उड़ीसा राज्यों के बीच में मेरा क्षेत्रफल ३५० किलोमीटर में फैला है। सांसद चुन्नीलाल जी ने कहा कि आप लोग जिस अभियान को लेकर चल पड़े हैं 'भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए INDIA नहीं' यह अभियान मात्र अभियान नहीं है बल्कि यह पूरे विश्व में हमारे भारत को सम्मान दिलाएगा,बस इतना ही कह सकता हूं की आप सभी को हमारी पार्टी भाजपा के वरिष्ठ अधिकारी, मंत्रीगण से भी संपर्क करना चाहिए। आपलोगों को सफलता जरूर मिलेगी, क्योंकि 'भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए INDIA नहीं' यह हर भारतीयों का स्वप्न है जो एक दिन जरूर पूरा होगा।

सांसद चुन्नीलाल साहू जी से मिलने मैं, बिजय कुमार जैन वरिष्ठ पत्रकार व संपादक राष्ट्रीय अध्यक्ष मैं भारत हूँ फाउंडेशन मुंबई निवासी, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्रीमती निशा लड्ढा कोलकाता निवासी, दिनेश जैन दिल्ली रोहिणी प्रभारी मिलने गए सांसद महोदय से 'जय भारत' कहते हुए धन्यवाद भी दिया, साथ ही निवेदन भी किया कि हम सभी को विश्वास है कि जल्द ही आपके द्वारा प्रस्तुत याचिका लोकसभा में चल रहे शीत सत्र के शून्यकाल में जरुर लगेगी और भारत के सभी सांसदों का सहयोग भी मिलेगा ताकि विश्व के मानचित्र में जहां आज INDIA लिखा है वहां BHARAT लिखा जा सकेगा।

जय भारत!

-बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए
का आव्हान करने वाला भारत माँ लाडला

एक भाषा की वजह से एकता को सफलता मिल सकती है, वह हिन्दी ही है - बिजय कुमार जैन

With Best Compliments

GURU RAJENDRA METALLOYS INDIA PVT LTD

G R METALLOYS PVT LTD

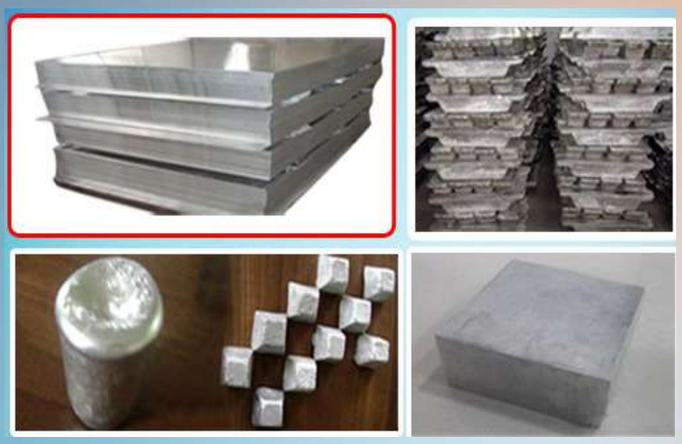

SHAH BABULAL DHANRAJJI JAIN

JAYANT BABULAL JAIN

SHAILESH BABULAL JAIN

Manufactures of Aluminium Alloy Ingot, Aluminium Ingot, Aluminium Notch bar, Aluminium Shots, Aluminium Cubes

8, Gautam Vihar Society, Opp. Sukhsagar Complex, Aroma School Road, Ashram Road, Usmanpura, Ahmedabad, Gujarat , Bharat– 380 013.

भारत का एक राज्य गुजरात का एक औद्योगिक शहर 'सूरत'

'सूरत' भारत का एक राज्य गुजरात का एक औद्योगिक शहर है। यह बेहद सीमित पश्चिमी प्रभाव वाला एक चहल-पहल भरा, सफल व्यावसायिक शहर है। 'सूरत' ने गुजरात के विकास में उछाल और उच्च गुणवत्ता वाले वस्त्रों के बड़े पैमाने पर उत्पादन के केंद्र के रूप में राज्य की ऐतिहासिक भूमिका की निरंतरता, दोनों का एक उदाहरण बनाता है। 'सूरत' एक बंदरगाह शहर और प्रशासनिक मुख्यालय है। २०११ तक 'सूरत' और उसके महानगरीय क्षेत्र की आबादी लगभग ४.५ करोड़ थी। यह गुजरात का दूसरा सबसे बड़ा शहर और भारत में ९वां सबसे बड़ा शहर है। सूरत एक प्रमुख रत्न केंद्र है और दुनिया के ९२% से अधिक हीरे यहीं तराशे जाते हैं। शहर ताप्ती नदी के तट पर है और ब्रिटिश औपनिवेशिक युग के दौरान एक प्रमुख बंदरगाह था। हालाँकि, बाँध परियोजनाओं के कारण, ताप्ती नदी अनुपयोगी हो गई और हजीरा के उपनगर में एक नए बंदरगाह का निर्माण किया गया।

रिक्शा चालक और होटल के कर्मचारी लगभग कोई अंग्रेजी नहीं बोलते, जिससे खाना ऑर्डर करना और यात्रा का आयोजन करना मुंबई या राजस्थान की तुलना में अधिक कठिन हो जाता है। फिर भी सूरती मित्रवत जिज्ञासु हैं, कभी-कभार अंग्रेजी बोलने वाला आपसे पूछेगा कि आप वहां क्यों आए हैं और यदि आपका उत्तर व्यवसाय के अलावा कुछ भी है तो चौंक जाएंगे, यदि आपको थोड़ी सी भी हिंदी या गुजराती आती है तो आपकी यात्रा अधिक रोचक और कहीं अधिक आसान होगी।

जलवायु: जलवायु उष्णकटिबंधीय है और शहर को मानसून का पूरा प्रभाव प्राप्त होता है। सर्दियों का तापमान अधिकतम ३१सें., न्यूनतम १२ सें. गर्मी का तापमान अधिकतम ४२ सें. न्यूनतम २४ सें.

वर्षा: मध्य जून से मध्य सितंबर तक ९३१.९ मिमी न्यूनतम दर्ज तापमान: ६.५ मी.मी. उच्चतम दर्ज तापमान: ४८ सें.

'सूरत' अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा (शहर के मगदल्ला क्षेत्र में है)। जहाँ से नई दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, बैंगलोर, पुणे, हैदराबाद, अहमदाबाद, गोवा, इंदौर, भोपाल, चेन्नई जैसे शहरों से उड़ाने भरती हैं, शारजाह के लिए अंतरराष्ट्रीय उड़ानें, साथ ही जून में सिंगापुर और बैंकॉक के साथ आने वाली कनेक्टिविटी रहती है।

निकटतम अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे, 'सूरत' शहर के साथ लगभग समान दूरी पर मुंबई (छत्रपति शिवाजी महाराज अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा (बीओएम आईएटीए)) और अहमदाबाद (सरदार वल्लभभाई पटेल (एसवीपी) अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा (एएमडी आईएटीए)) है।

मुंबई से ट्रेनों की आवृत्ति को देखते हुए 'सूरत' पहुंचने के लिए रेलवे परिवहन का सबसे पसंदीदा तरीका है।

'सूरत' शहर पश्चिमी रेलवे के माध्यम से राष्ट्रीय रेलवे प्रणाली से जुड़ा हुआ है जो इसे मुंबई और दक्षिण के साथ-साथ नई दिल्ली, अहमदाबाद, वडोदरा और उत्तर में अन्य शहरों से जोड़ता है। 'सूरत' रेलवे स्टेशन शहर के पूर्वी-मध्य भाग में है और प्रमुख होटलों और व्यवसायों के पास है। उधना जंक्शन और ताप्ती लाइन के माध्यम से मध्य रेलवे से भी जुड़ा हुआ है।

रास्ते में सभी स्टेशनों पर रुकने वाली लोकल ट्रेनों से लेकर अगस्त क्रांति राजधानी एक्सप्रेस, शताब्दी एक्सप्रेस, मुंबई अहमदाबाद एसी डबल डेकर जैसी सुपर फास्ट एक्सप्रेस ट्रेनों तक यात्री ट्रेनों की विविधता है, इसके अलावा बहुत सारी मालगाड़ियाँ हैं जो शहर द्वारा उत्पादित वस्तुओं को देश के बाकी हिस्सों में ले जाती हैं, शहर में आपूर्ति लाती है। भारतीय रेलवे आरक्षण वाली सभी ट्रेनों के लिए ऑनलाइन बुकिंग सेवा प्रदान करता है।

स्वर्णिम चतुर्भुज राजमार्ग व्यवस्था 'सूरत' शहर से होकर गुजरती है। आप ३ प्रमुख कनेक्टर राजमार्ग से राष्ट्रीय राजमार्ग ८ से सूरत में प्रवेश कर सकते हैं। राष्ट्रीय राजमार्ग ८ गलियारा देश में सबसे अधिक औद्योगिक रूप से विकसित क्षेत्रों में से एक है, 'सूरत' सबसे अधिक औद्योगिक रूप से सक्रिय शहरों में से एक है। राष्ट्रीय राजमार्ग ६ हजीरा से शुरू होता है और शहर को धुले, नागपुर, रायपुर, संबलपुर, खड़गपुर और कोलकाता से जोड़ता है।

सेंट्रल बस स्टेशन, रेलवे स्टेशन के विपरीत दिशा में है और जीएसआरटीसी द्वारा संचालित गुजरात के विभिन्न शहरों के लिए नियमित बसें हैं, डिपो पर बाहरी राज्यों की बसें रुकती हैं, पास ही निजी बस संचालकों का कार्यालय भी है।

'सूरत' में यात्रा करने के लिए शहर में एक स्थानीय सिटी बस प्रणाली है। 'सूरत' गुजरात के प्रमुख शहरों के साथ-साथ मुंबई और अन्य भारतीय शहरों से जुड़ा हुआ है। राज यात्रा वॉल्वो ए/सी बसें पूरे दिन भारत के विभिन्न शहरों में चलती हैं। लगभग ७०० से अधिक बसें सौराष्ट्र (गुजरात के पूर्वी भाग) के विभिन्न भागों के लिए प्रस्थान करती हैं।

हजीरा में एक बंदरगाह है, लेकिन यात्री नौकाएं/जहाज अक्सर संचालित नहीं होते। भारी जहाजों का उपयोग आमतौर पर रिलायंस, एस्सार और एलएंडटी, कृभको जैसे हजीरा स्थित उद्योगों द्वारा किया जाता है। **शेष पृष्ठ १३ पर...**

पृष्ठ १२ से ... शहर में एक स्थानीय सिटी बस प्रणाली है, शहर की सार्वजनिक परिवहन जरूरतों को निजी तौर पर संचालित ऑटो रिक्शा से भी पूरा किया जाता है।

बहुत सारी सड़क इंजीनियरिंग परियोजनाएँ पूरी हो चुकी हैं, विशेष रूप से एलिवेटेड सड़कें या शहर के हीरा और कपड़ा जिलों में फ्लाईओवर, इससे डायमंड और टेक्सटाइल जिलों की यात्रा करने वाले कई यात्रियों के आने-जाने के समय में काफी कमी आई है।

चिंतामणि जैन मंदिर: जैन मंदिर का निर्माण १६९९ ईस्वी में मुगल सम्राट

औरंगजेब के शासन के दौरान किया गया था। यह मिर्जन सामी के मकबरे के पास मुगलिसरा में है, इसका न केवल धार्मिक महत्व है, बल्कि गुजरात की वनस्पति डाई के साथ लकड़ी के शिल्प कौशल और ड्राइंग के सर्वोत्तम उदाहरणों में से एक है। हालांकि मंदिर अपनी बाहरी सादगी से पहचाना जाता है, लेकिन मंदिर का आंतरिक भाग कला का खजाना हैं।

सिटी साइंस सेंटर: पार्ले पॉइंट के पास सिटी लाइट रोड पर एक तारामंडल, विज्ञान मॉडल, आर्ट गैलरी और संग्रहालय है।

हीरा बाजार: 'सूरत' अपने कपड़ा और हीरे के कारोबार के लिए काफी हद तक पहचाना जाता है। दुनिया के ९२% हीरे सूरत में तराशे और पॉलिश किए जाते हैं। वराछा रोड पर हीरों के ढेर सारे कारखाने, हीरा व्यापार और दलाल

कार्यालय मिनी बाजार वराछा और महिधरपुरा में स्थित हैं।

डच गार्डन: प्राचीन डच उद्यान, डच कब्रिस्तान और मकाईपुल, पुराना मूल बंदरगाह, जहां से जहाज दुनिया के अन्य हिस्सों में **शेष पृष्ठ १४ पर...**

सूरत जिला के ऐतिहासिक प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Bharat Bhutada
Mob. : 9825119991
A/703, New Suncity Complex,
Behind Bhulka Bhavan School
Adajan, Surat, Gujarat, Bharat-395009

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

V.K. BAJAJ
Mob: 9377040807
REKHA
SYNTHETICS
Excluitive Fancy Dress Materials
E-1315-16-17, Radha Krishna Textile Market,
Ring Road, Surat, Gujarat-395002

पृष्ठ १३ से ... जाते थे, अन्य आकर्षण भी हैं।

लेक गार्डन, पिपलोद: लोग अपने प्रियजन के साथ यहां कुछ निजी समय बिता सकते हैं। लेक व्यू रेस्तरां भी अच्छा है।

मुगल सराय: 'सूरत' नगर निगम द्वारा एक कार्यालय परिसर के रूप में उपयोग की जाने वाली इमारत सूरत शहर के प्राचीन स्मारकों में से एक है और इसे 'सराय' या मुसाफरखाना (यात्रियों की सराय) के रूप में बनाया गया था, इसे १६४४ ईस्वी में मुगल सम्राट शाहजहाँ के काल में बनाया गया था। मेहराबों, कार्नियों, अलंकृत मुंडेरों, बाहरी मुखाग्र पर मूर्तिकला के पैटर्न आदि के संयोजन के साथ संयुक्त रूप से इसके विभिन्न भागों की कुशल रचना द्वारा निपटाए गए अपने काफी वास्तुशिल्प गुणों के साथ यह इमारत, प्रत्येक को मजबूत नींव पर कलात्मक और प्रभावी तरीके से बनाया गया है।

वेसु, सूरत में गगनचुंबी अपार्टमेंट: नेचर पार्क, सरथाना जकातनाका। नेचर पार्क सरथाना 'सूरत' शहर के उत्तर-पूर्व कोने में है, जहां 'सूरत' कामरेज रोड से पहुंचा जा सकता है। ८१ एकड़ के क्षेत्र में उत्तर की ओर तापी नदी के साथ कवर की गई है और इसके दक्षिण की ओर सूरत कामरेज रोड है। यूकेलिप्टस, कैसुरिना और आम के पेड़ों से भूमि पूरी तरह से वनस्पति है। साइट प्राकृतिक आवास डिजाइन की नई अवधारणा के साथ एक चिड़ियाघर एक आदर्श स्थान है।

विशाल थिएटर: लगभग ४,००० दर्शकों की क्षमता वाला एक ओपन-एयर थियेटर, यह देश के सबसे बड़े थिएटरों में से एक है।

सरदार पटेल संग्रहालय: यह संग्रहालय २०वीं शताब्दी की शुरुआत में स्थापित किया गया था और इसमें कला और शिल्प के १०,००० से अधिक

नमूनों का संग्रह है।

सूरत महल (पुराना किला): यह ऐतिहासिक महल जिसकी योजना और निर्माण १५४० और १५४६ के बीच खुदावंद खान द्वारा तापी नदी के तट

पर किया गया था। 'सूरत' के प्रमुख प्राचीन स्मारकों में से एक है। शानदार प्रवेश द्वार एक विशाल संरचना है, जिसमें मजबूत शेष पृष्ठ १५ पर...

Anil Aggarwal

Ruchi

SAREES

G-1315, Ground Floor, Surat Textile Market,
Ring Road, Surat, Gujarat, Bharat-395002
Ph: 0261-2321676 | Mob.:-9825899679
Website: www.ruchifashions.co.in
Email : ruchitfh@gmail.com

पृष्ठ १४ से... दरवाजे के शटर बाहरी अग्रभाग पर उभरी हुई स्पाइक्स से सुसज्जित हैं और आंतरिक अग्रभाग में एक सजावटी वास्तु से बनाया गया है। रविवार की शाम को पूरा शहर सड़कों पर (विशेष रूप से डुमास रोड पर)। लारी फूड (हॉकर फूड) के साथ शाम का आनंद लेने के लिए लोगों को सड़क के किनारे चादरें फैलाते देखना व बैठना आश्चर्यजनक लगता है।

गोपी तलाव, रुस्तमपुरा: झील का जीर्णोद्धार किया गया, इसमें बहुत अच्छा

बगीचा, रेस्तरां और नौका विहार की सुविधा उपलब्ध है।

साइंस सेंटर सिटी लाइट रोड: साइंस सेंटर (फन साइंस सेक्शन) के ऊपर, परिसर में संग्रहालय, आर्ट गैलरी, तारामंडल, ऑडिटोरियम, एम्फी थिएटर, डायमंड गैलरी है। यह कई सांस्कृतिक कार्यक्रमों और कला प्रदर्शनियों का मेजबान है।

एंड्रयू लाइब्रेरी ७६, चौक बाजार रोड, नानावत, गोपीपुरा: १८५० में एक धनी मोती व्यापारी नगीनचंद झावेरी ने इस पुस्तकालय के निर्माण के लिए धन दान किया और उनकी मदद के लिए ब्रिटिश कलेक्टर एंड्रयूज के नाम पर इसका नाम रखा। इसके हॉल का उपयोग स्टेज शो और सभाओं के लिए किया जाता था, लेकिन बाद में इसे पुस्तकालय के हिस्से में बदल दिया गया। यहाँ १८,००० पुस्तकें हैं, बड़ी संख्या में गुजराती और हिंदी उपन्यासों के साथ-साथ तत्कालीन रियासतों पर संदर्भ पुस्तकें भी हैं। यह नानपुरा पारसी पुस्तकालय से भी जुड़ा हुआ है।

मार्जन सामी रोजा: रोजा सूरत के गवर्नर ख्वाजा सफर सुलेमानीम को समर्पित है, इसे उनके बेटे ने १५४० में बनवाया था। इंडो-पर्शियन आर्किटेक्चर का उदाहरण है यह।

अंबिका निकेतन मंदिर: अंबिका निकेतन मंदिर 'सूरत' के लोकप्रिय तीर्थ स्थलों में से एक है। ताप्ती नदी के तट पर स्थित अम्बिका निकेतन मंदिर

का निर्माण १९६९ में हुआ था। यह मंदिर देवी माँ को समर्पित है, जो देवी अष्टभुजा अंबिका के रूप में हैं। मंदिर में सबसे शुभ अवसर नवरात्रि समारोह है, जो बड़े उत्साह के साथ आयोजित किए जाते हैं। **शेष पृष्ठ १६ पर...**

सूरत जिला की ताकत से पूरा भारत डोलता है
यह हम नहीं हमारा इतिहास बोलता है
सूरत जिला के ऐतिहासिक प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Manoharlal Toshniwal
Mob: 9374716740
VISHAL TRADERS
● HEAD OFFICE ●
10/1383 Ansuya Marg, Gopipura,
Surat, Gujarat, Bharat-395001

धर्म, कला और संस्कृति का खूबसूरत संगम है,
सूरत में यहां होता देवी-देवताओं का अद्भुत मिलन है
सूरत जिला के ऐतिहासिक प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं

OPA GROUP
10 Hi Tech Industrial Park, Bhestan,
Surat, Gujarat, Bharat-394221
e-mail : opatextiles@gmail.com
Contact Us :- 9909915013/9909914013

पृष्ठ १५ से... अम्बिका निकेतन मंदिर में राम-सीता, लक्ष्मीनारायण और भगवान शिव को समर्पित है।

सरदार वल्लभभाई राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान: १९६१ में भारत सरकार द्वारा स्थापित उच्च शिक्षा का एक इंजीनियरिंग संस्थान है। भारत में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थानों को भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय महत्व के संस्थान के रूप में मान्यता प्राप्त है, इसकी स्थापना अनुसंधान एवं विकास तथा तकनीकी जनशक्ति के लिए देश की बढ़ती आवश्यकता को पूरा करने के लिए वैज्ञानिकों और इंजीनियरों को प्रशिक्षित करने के लिए किया गया था। यह अपनी संगठनात्मक संरचना और स्नातक प्रवेश प्रक्रिया को साझा करता है। संस्थान इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी, विज्ञान, मानविकी और प्रबंधन में स्नातक, स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट पाठ्यक्रम प्रदान करता है।

शहर में पुस्तकालय:

गांधी स्मृति पुस्तकालय, नानपुरा, तिमलियावाड़। सोमवार और सार्वजनिक अवकाश के दिन सुबह ८ बजे से शाम ८ बजे तक खुला रहता है।

गणपतराम पुस्तकालय: अंबाजी रोड, पगथिया शेरी में है।

कवि नर्मद केंद्रीय पुस्तकालय: उमरा पुलिस स्टेशन के सामने, अथर्वा लाइन में है।

नगिनदास काजी फ्री लाइब्रेरी: घी कांता रोड, हरिपुरा में है।

पब्लिक लाइब्रेरी: छपरिया शेरी, महिधरपुरा है।

'सूरत' पर्यटकों की रुचि के लिए सीमित स्थान हैं, 'सूरत' का मुख्य आकर्षण खरीदारी है। 'कपड़ा बाजार' में थोक व्यापारियो की भरमार है। सुंदर साड़ियों को बेचने वाले थोक विक्रेताओं की अंतहीन पंक्तियाँ खुदरा ग्राहकों को बेच सकती हैं या नहीं भी, लेकिन आपको यहाँ ऐसे कपड़ों पर उत्कृष्ट सौदे मिलेंगे। यदि आप साड़ियों में रुचि नहीं रखते हैं, तो भारतीय ब्रांड के कपड़ों की दुकानों के समूह भी हैं। गोहद डोड रोड की कई कपड़ों की दुकानें खूबसूरत डिजाइनर सलवार कमीज, साड़ी और इंडो-वेस्टर्न ड्रेस की श्रृंखला की भरमार हैं। संभवतः वे मुंबई में डिज़ाइन किए गए होगे पर और सूरत में निर्मित किए गए हैं, इसलिए सूरत ऐसी वस्तुओं के लिए सबसे सस्ती जगह है। उच्च गुणवत्ता वाले डिजाइनर कपड़ों की कीमत दिल्ली और मुंबई की तुलना में लगभग आधी है। पुरुष खरीदारों के लिए आप यहां उच्च गुणवत्ता वाले औपचारिक और आकस्मिक परिधानों पर अच्छे सौदे पा सकते हैं।

सौंदर्य और फैशन: घोडदोड रोड, इस्कोआन मॉल और कई अन्य स्थानों पर स्थित शहर में सौंदर्य और फैशन की कई दुकानें हैं।

स्कूली शिक्षा: इंजीनियरिंग और वाणिज्य के छात्रों की किताबों की अधिकांश जरूरतें या लाइन्स इलाके में किताबों की दुकानों की बहुतायता।

कपड़े: पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए एक फैशनेबल बुटीक है, स्टोर में उचित मूल्य पर उच्च गुणवत्ता वाले पूर्वी और पश्चिमी कपड़े उपलब्ध हैं जो की स्थानीय कपड़ा उद्योग के यूरोपीय डिजाइनर ब्रांडों से आगे हैं।

हीरे: शहर में बड़ी संख्या में जौहरियों की हैं।

शॉपिंग प्लाजा: डुमास रोड पर स्थित इस्कॉन मॉल और बिग बाजार के साथ नवीनतम आकर्षण के साथ उपलब्ध हैं।

सूरत की अपना 'पानी पूरी' का स्वाद ही अलग है।

सूरत के कुछ खास और अनोखे व्यंजनों में लोचो, सुरती उंधियू, रसवाला खमन, कोल्ड कोको और सुरती घरी शामिल हैं। गुजरात राज्य के कई लोकप्रिय भोजन के साथ सुरती व्यंजन रूढ़िवादी गुजराती भोजन की तरह मीठा नहीं है बल्कि तीखा भी है।

सर्दियाँ आते ही सुरतियाँ पोंक खाने के लिए 'तापी नदी' के तट पर निकल आएंगी, 'पोंक' एक अनोखा भुना हुआ बाजरा है।

सूरत आमतौर पर चंडी पड़वों के उत्सव के लिए भी जाना जाता है जो आमतौर पर अक्टूबर के आसपास आता है। यह हिंदू कैलेंडर वर्ष का सबसे बड़ा पूर्णिमा दिवस है, इस दिन 'सूरती' घरी और अन्य सुरती व्यंजन खरीदते हैं फिर डुमास जाते हैं जहां वे पूर्णिमा के तहत रात का खाना/देर रात करते हैं।

भारत में एक लोकप्रिय कहावत है जिसका अनुवाद किया गया है कि यदि काशी स्वर्ग की सीढ़ी है, तो सूरत भोजन का स्थान है। व्यंजनों की विविधता काफी बड़ी है, स्थानीय गुजराती थाली से लेकर दक्षिण भारतीय भोजन तक। 'सूरत' में भारतीय करी, क्लासिक, दीवान-ए-खास जैसे कई अच्छे भोजनालय हैं जो 'सूरती' को पारंपरिक भारतीय भोजन का स्वाद देन है, **शेष पृष्ठ १७ पर...**

कुछ अलग ही सुकून मिलता है सूरत की मिट्टी में
और कुछ अलग ही स्वाद है यहां के खाने में

Ravindra Arya CMD
Mob : 9909018860
Bindal
Silk Mills Pvt. Ltd.
Bindal House, Kumbharia, Surat-Kadodara Road, Surat, Gujarat-395010 Tel: + 91-261-2640700/01/02/03
Website: www.bindalmill.com E-mail : ravindra.arya@bindalmill.com
Factory : P-216, Kadodara Char Rasta, Kadodara Taluka : Palsana, Surat, Gujarat - 394327 Tel: +91-2622-271009

पृष्ठ १६ से ... दक्षिण भारतीयों के लिए मैसूर कैफे, विष्णु और मल्लू रेस्तरां एक दक्षिण भारतीय भोजन प्रदान करते हैं। सड़क के किनारे स्टॉल (स्थानीय बोलचाल में लारी) स्वादिष्ट और सस्ता भोजन प्रदान करते हैं।

सौराष्ट्र बेकरी (मार्जन सामी रोजा के पीछे)। नानूभाई सैय्यदवाला की दुकान द्वारा बनाया गया नानखताई बिस्किट अति स्वादिष्ट है।

'सूरत' में आप लगभग किसी भी बजट में अपना पेट भर सकते हैं।

बजट कम होने पर आप लारियों (सड़क किनारे फेरीवालों) में खाना ले सकते हैं। शहर भर में ढोसा, सैंडविच, पिज्जा, वड़ा-पाव, पाव-भाजी, पानी-पूरी आदि की लाड़ियां हैं। आप शहर के किसी भी कोने में आसानी से पा सकते हैं।

आपने ज़म्पा बाज़ार में सुबह-सुबह बारा (१२) हांडी (बर्तन) नाश्ते की कोशिश नहीं की है, तो कई स्थानीय लोग कहेंगे कि आप नहीं जानते कि वास्तव में भारी नाश्ता क्या होता है। स्वच्छता शब्द का आप उपयोग नहीं कर सकते, लेकिन यह वास्तव में अद्भुत है, आप इसे मीठे मालपुआ के साथ फॉलो कर सकते हैं।

रविवार की सुबह युवाओं और परिवारों को समान रूप से डुमास क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के भजिया के लिए भीड़ लगाते हुए देखा जा सकता है, कुछ वैरायटी के लिए टमाटर, रतालू, मिर्च ट्राई करें।

'सूरत' की कुल्फी और हाथ से बनी आइसक्रीम भी मशहूर है, कुछ बहुत ही अलग तरह के स्वाद जैसे मिर्च (मिर्च), धनिया, अदरक, आदि को जनता आइसक्रीम आउटलेट पर पाया जा सकता है। किशोर आइसक्रीम भी प्रसिद्ध है।

अगर आप अच्छी हाथ से बनी कुल्फी/आइसक्रीम का स्वाद चाहते हैं तो बादशाह, ताजमहल, किंग, हजूरी जांपा बाजार जाएं।

डोसा और साई डोसा सबसे लोकप्रिय प्रकार के डोसा और दक्षिण भारतीय व्यंजन हैं।

एयरपोर्ट रोड पर बहुत सारे मॉल आने के साथ ही भारत की प्रमुख खाद्य श्रृंखलाओं ने शहर में आना शुरू कर दिया है। मुख्यभूमि चीन, मैकडॉनल्ड्स, केएफसी और टीजीबी। 'सूरत' में खाने और रेस्टोरेंट की बहुत अच्छी श्रृंखला **शेष पृष्ठ १८ पर...**

कुछ अलग ही सुकून मिलता है सूरत की मिट्टी में
और कुछ अलग ही स्वाद है यहां के खाने में

Vidyakar Bansal
Mob. :- 9824157002
702 Solitaire Apartment, Brijwasi Estate,
Opp Umrigar School, Parle Point,
Surat, Gujarat, Bharat-395007

कुछ अलग ही सुकून मिलता है सूरत की मिट्टी में
और कुछ अलग ही स्वाद है यहां के खाने में
'सूरत' जिला के ऐतिहासिक प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं

GOPI Silk Mills
Anand Jindal
Mob. : 9825123635/9374715376
Anand Enterprise Textile
Art Silk Cloth Merchants & Commission Agent
B-312, L. B. Apartment, 3rd Floor, Ring Road,
Surat, Gujarat, Bharat-395002
Ph: (0261) 2326986

'सूरत' जिला के
ऐतिहासिक प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Gajanand Rathi
Mob. :- 98240 51931
Rathi TEX FAB PVT. LTD.
2001, Annapurna Textile Market, Ring Road, Surat, Gujarat, Bharat-395002

कुछ अलग ही सुकून मिलता है सूरत की मिट्टी में
और कुछ अलग ही स्वाद है यहां के खाने में

Vinod Kanodia
Mob. :- 9825139625
Surat, Gujarat, Bharat-395007

पृष्ठ १७ से ... है, इसमें सभी बड़े ब्रांड शामिल हैं। चाइनीज रूम (नानपुरा) और सुगर एन स्पाइस (रिंग रोड) के अलावा अच्छी कीमत पर अच्छा भोजन प्रदान करते हैं।

गुजराती भोजन के लिए ससुमा, स्वस्तिक, कंसर, सब्रस, सब फूड और एक्सप्रेस पर जाएँ।

खाने की जगहों के साथ राजस्थानी खाना: चौखीढानी, भटवारी, ये दोनों सूरत के सबसे अच्छे आधुनिक पारंपरिक रेस्तरां हैं, जो पंजाबी खाने के साथ-साथ जयपुरी और गुजराती खाना भी देते हैं। लोग पार्टी मनाने के लिए परिवारों और बच्चों के साथ-साथ दोस्तों के साथ भी जा सकते हैं।

वैलेंटाइन, सिटी प्लस और राज एम्पायर जैसे कई मल्टीप्लेक्स में खाने-पीने की अलग-अलग जगहें हैं।

सिजलिंग साल्सा, पहली मंजिल, राजहंस सिनेमा, सूरत-डुमास रोड, इस्कॉन मॉल के सामने, इतालवी और मैक्सिकन सहित कई तरह के व्यंजन पेश करता है। क्रेज़ी बाइट, इटालियन और मेक्सिकन सहित कई प्रकार के व्यंजन उपलब्ध करवाता है।

कंडील रिवॉल्विंग रेस्तरां, कपड़ा बाजार क्षेत्र के केंद्र में है, इनके पास एक निश्चित बुफे प्रणाली है।

शुगर एन स्पाइस, रिंग रोड, राज साम्राज्य के पास भटाद और पार्ले पॉइंट पर एक रेस्तरां श्रृंखला है।

भारत का स्वाद, डावर चैंबर, रिंग रोड, जे.के. टॉवर के बगल में है।

गोल्डन ड्रैगन (जीडी), घोडदोड रोड, पर भारतीय चीनी भोजन परोसता है।

सूरत से समुद्र तट

उच्च ज्वार के कारण 'सूरत' के समुद्र तटों पर नहाने की सलाह नहीं दी जाती है। आपके लिए सूरज और रेत का आनंद लेने के लिए 'सूरत' के पास कई समुद्र तट हैं।

डुमास: डुमास स्थानीय लोगों के बीच एक लोकप्रिय रिसॉर्ट है।

हजीरा: हजीरा शहर से २८ किमी दूर है, लेकिन उद्योगों की स्थापना के कारण, इसका अधिकांश हिस्सा अब घाटों में परिवर्तित हो गया है।

सुवाली: सूरत से २७ किमी दूर एक शांतिपूर्ण और साफ समुद्र तट है। यह उच्च ज्वार पर खतरनाक हो जाता है।

नवसारी: नवसारी सूरत से २९ किमी दक्षिण में है, भारत में बसने के शुरुआती दिनों से ही पारसी समुदाय का मुख्यालय रहा है।

तीथल: अगर आप नहाना चाहते हैं तो सुआर्ट से ८० किमी दक्षिण में वलसाड के पास का समुद्र तट सुरक्षित समुद्र तटों में से एक है।

उधवाड़ा: उधवाड़ा, दमन के स्टेशन वापी से १० किमी उत्तर में, भारत में सबसे पुरानी पारसी पवित्र स्थल है। ऐसा कहा जाता है कि यहाँ की अग्नि ७०० ईस्वी में कैम्बे की खाड़ी के विपरीत तट पर फारस से दीव तक लाई गई थी।

उंभराट: उंभराट ४२ किमी बाहर है।

संजन: राज्य के चरम दक्षिण में एक छोटा बंदरगाह है, जहां पारसी पहली बार उतरे थे। यह एक स्थान को चिह्नित करता है।

सूरत में श्रीयादेवी भागीरथ राठी माहेश्वरी विद्यापीठ

श्रीयादेवी भागीरथ राठी माहेश्वरी विद्यापीठ, सूरत में वर्ष २००१ से समाज की सेवा करने वाली एक अग्रणी शैक्षणिक संस्थान है। यह स्कूल श्री माहेश्वरी शिक्षण संस्थान के अंतर्गत शुरू किया गया था, जो सूरत के बच्चों को आधुनिकता और परंपरा के साथ शिक्षा प्रदान करने की दृष्टि पर कार्य करता है। हम सभी आधुनिक जीवन की जटिलताओं में मूल्यों से जुड़ी अच्छी शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता को समझते हैं ताकि हमारे बच्चे अपनी पहचान बनाने के लिए दुनिया में आगे बढ़ने पर उन पर आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हों। विद्यापीठ भारतीय नौनिहालों को देश का सशक्त नागरिक बनाने के लिए लगन से कार्य कर रही है, यदि कोई जीवन में अच्छा करना चाहता है, तो उसे अपनी तैयारी अभी से शुरू कर देनी चाहिए और एस.बी.आर. माहेश्वरी विद्यापीठ छात्रों को विश्व में सम्मान दिलाने के लिए संकल्पित है जो न केवल १००% बोर्ड परिणाम बल्कि छात्रों द्वारा शहर में भी शीर्ष स्थान हासिल कर रहे हैं। स्कूल के छात्रों ने समाज के विभिन्न कार्यों में अपना उत्कृष्ट स्थान बनाया है। अपने नवोदित भविष्य के लिए अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ सर्वोत्तम शिक्षा प्रदान करने के अपने दृष्टिकोण और मिशन का पालन कर रहे हैं, इरादा मात्र अपने समर्पित प्रयासों से अपने समाज और देश की भलाई में योगदान देना है। ८२ शिक्षकों की एक टीम है जो छात्रों के लिए मददगार रूप में काम करते हैं। विश्लेषणात्मक क्षमता, सोच कौशल, संचार कौशल, महत्वपूर्ण सोच, शिष्टाचार को छात्रों में बढ़ाने के लिए अथक प्रयास किया जाता है। स्कूल सभी आधुनिक सुविधाओं के साथ उत्कृष्ट बुनियादी ढांचा भी प्रदान करता है। प्रत्येक कक्षा में चालीस छात्रों के साथ ४८ खंड हैं, जिनकी कुल संख्या १९६० है। प्रत्येक कक्षा सूचना प्रौद्योगिकी (इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी) के लिए सक्षम है। अत्याधुनिक कंप्यूटर लैब, साइंस लैब, मैथ्स लैब, ऑडियो विजुअल रूम और एक विशाल सभागार भी उपलब्ध है। छात्रों को प्रत्यक्ष अनुभव तब मिलता है जब वे सीबीएसई और भारत सरकार द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं के साथ-साथ इंट्रास्कूल, इंटरस्कूल प्रतियोगिताओं में भाग लेते हैं। हमारे यहाँ के दो छात्र युवा मामले और खेल मंत्रालय द्वारा आयोजित FIT India Quiz 2020 के राज्य विजेता बने हैं। कहा जा सकता है कि शिक्षा को ध्यान में रखते हुए छात्रों के सर्वांगीण विकास का लक्ष्य रखा जाता है जो कि आज की आधुनिक पद्धति से अपना नाम और भारत नाम को सम्मान दिला सकते हैं।

श्री माहेश्वरी भवन समिति सूरत

सूरत शहर के मुख्य आवासीय क्षेत्र सीटी लाइट में निर्मित माहेश्वरी भवन गत लगभग २३ वर्षों से माहेश्वरी समाज एवं सूरत के अन्य निवासियों के उपयोग में आ रहा है, इस भवन में ग्राउण्ड फ्लोर व फर्स्ट फ्लोर पर ५४०० sq ft के २ AC हॉल हैं। कुल ३२ कमरे हैं तथा ६० सदस्यों का एक बोर्ड रूम है। बेसमेण्ट में ५४०० sq ft की पार्किंग है। भवन के फण्ड में से विधवा सहायता, चिकित्सा सहायता एवं शिक्षा सहायता जैसे समाज हित के कार्य भी किये जा रहे हैं।

श्री माहेश्वरी सेवा सदन सूरत

३१०० बार एरिया ५ स्टार कैटेगरी में बनाया हुआ है जिसमे २ बेसमेंट पार्किंग के साथ ५ फ्लोर में हॉल और रूम बने हुए हैं।
जिसमें ७००-८०० मेहमानों का स्वागत के साथ २ भव्य वाताकुलिनित एवं हाईट बैंक्वेट हॉल और १५०- २०० मेहमानों के लिए छोटा बैंक्वेट हॉल और २५० सदस्यों के हिसाब से लक्जरी रूम की सुविधा बनाई गई है।

शांतादेवी सीताराम मुंधड़ा माहेश्वरी पब्लिक स्कूल

माहेश्वरी शिक्षण संस्थान की छत्रछाया में माहेश्वरी विद्यापीठ एवं माहेश्वरी पब्लिक स्कूल, सूरत का उद्देश्य शिक्षा को भविष्य का स्तम्भ बनाना है, क्योंकि कल उन लोगों का है जो आज इसकी तैयारी करते हैं। हमारा लक्ष्य शिक्षा में अग्रणी बनना है, जो श्रेष्ठ ता को पोषित करने और बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। हमारा उद्देश्य छात्रों के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करना ताकि उनमें आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता और अखंडता का विकास हो।

अपेक्षित और अप्रत्याशित दोनों को प्राप्त करने के लिए हमेशा तैयार रहना यह एक स्थायी परंपरा है। आने वाले वर्षों में चुनौतियों का सामना करते हुए, तालमेल बिठा कर कई उपलब्धियों को हासिल करना हैं। संस्थान ने किसी भी प्रयास में कोई कसर नहीं छोड़ी है और प्रामाणिक सीखने का माहौल प्रदान किया है जो कि बोर्ड परीक्षा में १००% परिणाम के माध्यम से परिलक्षित होता है। योग्य एवं विद्वानों के साथ ६८ शिक्षकों की एक टीम के साथ कार्य करते हैं, जो अपने छात्रों को ज्ञान, कौशल और विषय वस्तु प्रदान करने का एकमात्र उद्देश्य रखते हैं और नई चुनौतियों का सामना करने के लिए हमेशा उत्सुक रहते हैं।

विद्यालय में कक्षा १ से १२ तक ५२ खंड, जिसमें प्रत्येक खंड, में ४० छात्र हैं, जिनकी कुल संख्या २०४० हैं। स्मार्ट डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कक्षाओं में २८ स्मार्ट बोर्ड स्थापित किए गए हैं, यह प्रणाली शिक्षण-अधिगम अनुभव को बढाती है, जिससे छात्रों को उनकी समझ, नवाचार और महत्वपूर्ण सोच को बढ़ावा देने में कारगर साबित होती है। प्रतियोगिताएं, त्यौहार और समारोह ऐसे आयोजन भी होते हैं जो छात्रों को रीति-रिवाजों और परंपराओं की ओर संवेदनशील बनाते हैं।

संक्षेप में, स्कूल हमेशा से ही सभी क्षेत्रों में हर छात्र का समग्र विकास के लिए अग्रसर है। आखिरकार 'उत्कृष्टता एक कला है जिसे प्रशिक्षण से जीता जाता है'।

कोई भी राजनीतिक कारण कितने ही प्रबल क्यों न हों, 'हिन्दी' भाषा के इस उत्थान में आड़े आने नहीं देना चाहिए - बिजय कुमार जैन

सूरत माहेश्वरी महिला मंडल को सम्मान दिलाने का कार्य करते है- इंदिरा साबू

श्री माहेश्वरी महिला मंडल सूरत की वर्तमान अध्यक्षा इन्द्रा साबू कई वर्षों से मंडल की कार्यकारिणी से जुड़ी हैं, विभिन्न पदों का कार्यभार पूर्ण करते हुए अध्यक्षा पद का कार्यभार संभाल रही हैं, इसके पूर्व लायन्स सिल्क सिटी में भी विभिन्न पदों एवं अध्यक्षा का पदभार संभाली हैं। इन्द्रा जी का जन्म राजस्थान जयपुर में हुआ, शिक्षा वनस्थली विद्यापीठ में हुई। १९९० से सूरत में रहती हैं। बताती है आज के सूरत और पहले के 'सूरत' में बहुत अंतर आया है। 'सूरत' में दिन दूनी-रात चौगुनी तेजी से प्रगति हुई है। 'सूरत' नाम से ही नहीं अपितु 'सूरत' देखने लायक भी है, यह सिल्क सिटी एवं डायमंड सिटी के नाम से विश्व में प्रसिद्ध है। कुछ लोग 'सूरत' को मिनी सिंगापुर भी बोलते हैं। अनेक फ्लाईओवर, साफ-सफाई, हर तरफ प्रगति दिखाई देती है, सभी धर्म के लोग एक साथ मिलजुल कर रहते हैं। यहां महिला किसी भी समय घूम-फिर सकती हैं, सुरक्षित महसूस करती हैं।

श्री माहेश्वरी महिला मंडल सूरत की स्थापना सन् १९८७ में प्रथम अध्यक्षा श्रीमती विमला जी साबू द्वारा किया गया। मंडल को ३५ वर्ष हो चुके हैं। मंडल को विभिन्न बहनों ने अपने-अपने अध्यक्षा काल में अनेका नेक प्राणी मात्र की सेवा कार्य कर मंडल को विशाल वटवृक्ष बनाया है। वर्तमान में मंडल की अध्यक्षा पद संभाल कर मैं अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रही हूँ। अब तक मंडल में १००० बहनें सदस्य बन चुकी हैं। मंडल द्वारा सामाजिक-धार्मिक-सांस्कृतिक सेवा व शिक्षा क्षेत्र, स्वास्थ्य क्षेत्र और अन्य क्षेत्रों में भी भिन्न-भिन्न कार्यक्रम किए जाते हैं। महिलाओं को अपना व्यवसाय करने में भी योगदान करता है मंडल, प्लेटफार्म देकर महिलाओं को सशक्त बनाने में सहयोग करता है और संगिनी मेला का आयोजन भी करता है। जय भारत!

सूरत की एक प्रतिष्ठित संस्था-दक्षिणी गुजरात चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री

(एसजीसीसीआई) एक आईएसओ ९००१:२०१५ प्रमाणित संगठन है। वर्ष १९४० में स्थापित, गुजरात का सबसे पुराना शीर्ष निकाय है, जो भरूच से वापी और उमरगांव से मुंबई की ओर दक्षिणी गुजरात क्षेत्र के व्यापार और उद्योग के विकास पर कार्यरत है, सबसे समृद्ध संस्था में से एक है। राज्य के कुछ हिस्सों के पास व्यापार और उद्योग के व्यापक स्पेक्ट्रम से १०,००० से अधिक सदस्य हैं।

दुनिया का सबसे बड़ा हीरा काटने और चमकाने का उद्योग, भारत का सबसे बड़ा मानव निर्मित कपड़ा उद्योग ने 'सूरत' को दुनिया के नक्शे पर ला दिया है, सूरत को दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ते शहरों में से एक है।

२५ से अधिक व्यापार मेलों और उद्योग विशिष्ट प्रदर्शनियों की कला में महारत हासिल की है, जिसमें कपड़ा, रत्न और आभूषण, हथकरघा और हस्तशिल्प, ऑटोमोबाइल, इंजीनियरिंग और भारी उद्योग जैसे क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया है और महिला उद्यमियों द्वारा उत्पादों और सेवाओं का प्रदर्शन किया जाता है।

प्रदर्शनियों को विश्वस्तरीय बनाने और अंतर्राष्ट्रीय भागीदारी को आमंत्रित करने के लिए 'सूरत अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी और कन्वेंशन सेंटर' कार्यरत है, जो १३ हेक्टेयर भूमि में फैला है और इसमें १,१६,००० वर्ग फुट का पूरी तरह से वातानुकूलित स्तंभ रहित गुंबद है।

व्यापार और वाणिज्य को बढ़ावा देने के लिए, विभिन्न सेमिनार, कार्यशाला और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से सदस्यों और जनता के बीच ज्ञान और जानकारी साझा करने पर भी ध्यान केंद्रित करता है।

सरकार की विभिन्न पहलुओं को लागू करने के माध्यम से दक्षिणी गुजरात क्षेत्र में विकास के लिए प्रतिबद्ध है। सूरत में विनिर्माण का एक मजबूत आधार है और सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) की भागीदारी के साथ राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद में बड़े पैमाने पर योगदान दे रहा है।

दुनिया भर में 'ब्रांड सूरत' को बढ़ावा देने और इस क्षेत्र में विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिए प्रतिबद्ध है जो जबरदस्त औद्योगिक विकास की दहलीज पर है। दक्षिण गुजरात के लोग सीमाओं की बाधाओं से परे व्यापार में उद्यम करने के लिए बहुत ही उद्यमी और साधन संपन्न हैं, दुनिया के अन्य हिस्सों में भी निवेश के अवसर तलाशने के लिए भी तत्पर है।

प्रमुख उद्देश्य:

दक्षिणी गुजरात चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री द्वारा विश्व स्तरीय चैंबर ऑफ कॉमर्स बनने का प्रयास:

- सरकार के विभिन्न स्तरों पर व्यापार और उद्योग के विचारों का प्रतिनिधित्व करना
- नेटवर्किंग वैश्विक व्यापार और वाणिज्य सदस्यों को लाभान्वित करने के लिए। विश्वस्तर के मानकों को पूरा करने वाले व्यापार और उद्योग में गुणवत्ता प्रणालियों को बढ़ावा देना।
- लिंकेज के माध्यम से व्यापार और उद्योग को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ावा देना।
- उत्कृष्टता को बढ़ावा देने के लिए व्यक्तियों और कंपनियों के लिए मान्यता योजनाएं स्थापित करना।
- विभिन्न सेमिनारों, सम्मेलनों और कार्यशालाओं के माध्यम से व्यापार और उद्योग में तकनीकी जानकारी को उन्नत करना।

देश की शान, हिंदी है महान-बिजय कुमार जैन

लोग एक-दूसरे को तिल गुड़ देते हैं और देते समय बोलते हैं-'तिळ गूळ घ्या आणि गोड-गोड बोला'' अर्थात तिल गुड़ लो और मीठा-मीठा बोलो, इस दिन महिलाएँ आपस में तिल, गुड़, रोली और हल्दी बाँटती हैं।

मकर संक्रान्ति हिन्दुओं का प्रमुख पर्व है। मकर संक्रान्ति पूरे भारत और नेपाल में किसी न किसी रूप में मनाया जाता है। पौष मास में जब सूर्य मकर राशि पर आता है तभी इस पर्व को मनाया जाता है। यह त्योहार जनवरी माह के चौदहवें या पन्द्रहवें दिन ही पड़ता है क्योंकि इसी दिन सूर्य धनु राशि को छोड़ मकर राशि में प्रवेश करता है। 'मकर संक्रान्ति' के दिन से ही सूर्य की उत्तरायण गति भी प्रारम्भ होती है इसलिये इस पर्व को कहीं-कहीं उत्तरायणी भी कहते हैं। तमिलनाडु में इसे पोंगल नामक उत्सव के रुप में मनाते हैं जबकि कर्नाटक, केरल तथा आंध्र प्रदेश में इसे केवल संक्रांति ही कहते हैं।

मकर संक्रान्ति के विविध रूप

यह भारत तथा नेपाल के सभी प्रान्तों में अलग-अलग नाम व भाँति-भाँति के रीति-रिवाजों द्वारा भक्ति एवं उत्साह के साथ धूमधाम से मनाया जाता है। राजस्थान में इस पर्व पर सुहागन महिलाएँ अपनी सास को वायना देकर आशीर्वाद प्राप्त करती हैं, साथ ही महिलाएँ किसी भी सौभाग्यसूचक वस्तु का चौदह की संख्या में पूजन एवं संकल्प कर चौदह ब्राह्मणों को दान देती हैं, इस प्रकार 'मकर संक्रान्ति' के माध्यम से भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की झलक विविध रुपों में दिखती है।

महाराष्ट्र में इस दिन सभी विवाहित महिलाएँ अपनी पहली संक्रान्ति पर कपास, तेल व नमक आदि चीजें अन्य सुहागिन महिलाओं को दान करती हैं। तिल-गूड़ नामक हलवे के बाँटने की प्रथा भी है। लोग एक-दूसरे को तिल गुड़ देते हैं और देते समय बोलते हैं - 'तिळ गूळ घ्या आणि गोड-गोड बोला'' अर्थात तिल गुड़ लो और मीठा-मीठा बोलो, इस दिन महिलाएँ आपस में तिल, गुड़, रोली और हल्दी बाँटती हैं।

मकर संक्रान्ति का महत्व - शास्त्रों के अनुसार दक्षिणायण को देवताओं की रात्रि अर्थात् नकारात्मकता का प्रतीक तथा उत्तरायण को देवताओं का दिन अर्थात् सकारात्मकता का प्रतीक माना गया है, इसीलिए इस दिन जप-तप, दान स्नान, श्राद्ध, तर्पण आदि धार्मिक क्रियाकलापों का विशेष महत्व है, ऐसी धारणा है कि इस अवसर पर दिया गया दान सौ गुना बढ़कर पुन: प्राप्त होता है, इस दिन शुद्ध घी एवं कम्बल का दान मोक्ष की प्राप्ति करवाता है, जैसा कि निम्न श्लोक से स्पष्ठ होता है -

माघे मासे महादेव : यो दास्यति घृतकम्बलम
स भुक्त्वा सकलान भोगान अन्ते मोक्षं प्राप्यति

मकर संक्रान्ति के अवसर पर गंगास्नान एवं गंगातट पर दान को अत्यन्त शुभ माना गया है। इस पर्व पर तीर्थराज प्रयाग एवं गंगासागर में स्नान को महास्नान की संज्ञा दी गयी है। सामान्यत: सूर्य तभी राशियों को **शेष पृष्ठ २२ पर...**

पृष्ठ २१ से... प्रभावित करते हैं, किन्तु कर्क व मकर राशियों में सूर्य का प्रवेश धार्मिक दृष्टि से अत्यन्त फलदायक है, यह प्रवेश अथवा संक्रमण क्रिया छ:-छ: माह के अन्तराल पर होती है। भारत विश्व के उत्तरी गोलार्ध में स्थित है। मकर संक्रान्ति से पहले सूर्य दक्षिणी गोलार्ध में होता है अर्थात् भारत से अपेक्षाकृत अधिक दूर होता है, इसी कारण यहाँ पर रातें बड़ी एवं दिन छोटे होते हैं तथा सर्दी का मौसम होता है किन्तु मकर संक्रान्ति से सूर्य उत्तरी गोलार्द्ध की ओर आना शुरु जाता है, अतएव इस दिन से रातें छोटी एवं दिन बड़े होने लगते हैं तथा गरमी का मौसम शुरु हो जाता है। दिन बड़ा होने से प्रकाश अधिक होगा तथा रात्रि छोटी होने से अन्धकार कम होगा, अत: मकर संक्रान्ति पर सूर्य की राशि में हुए परिवर्तन को अंधकार से प्रकाश की ओर अग्रसर होना माना जाता है। प्रकाश अधिक होने से प्राणियों की चेतनता एवं कार्य शक्ति में वृद्धि होगी, ऐसा जानकर सम्पूर्ण भारतवर्ष में लोगों द्वारा विविध रुपों में सूर्यदेव की उपासना, आराधना एवं पूजन कर, उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की जाती है, सामान्यत: भारतीय पंचांग पद्धति की समस्त तिथियाँ चन्द्रमा की गति को आधार मानकर निर्धारित की जाती हैं, किन्तु 'मकर संक्रान्ति' को सूर्य की गति से निर्धारित किया जाता है, इसी कारण यह पर्व प्रतिवर्ष १४ जनवरी को ही पड़ता है।

स्नान का महत्व

कहा जाता है कि 'मकर संक्रांति' के दिन गंगा स्नान करने पर सभी कष्टों का निवारण हो जाता है इसलिए इस दिन दान, तप, जप का विशेष महत्व है, ऐसी मान्यता है कि इस दिन को दिया गया दान विशेष फल देने वाला होता है।

मकर संक्रांति : एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण

भारत पर्वों एवं त्योहारों का देश है, यहाँ कोई भी महीना ऐसा नहीं है, जिसमें कोई न कोई त्यौहार न पड़ता हो, इसीलिए अपने देश में यह उक्ति प्रसिद्ध है कि 'सदा दीवाली साल भर, सातों दिन त्यौहार' इन्हीं त्यौहारों में मकर संक्रांति भी है, जिसकी अपनी एक अलग ही विशेषता है एवं वैज्ञानिक आधार है। हमलोगों में से बहुत कम लोग जानते हैं कि मकर संक्रांति का पर्व क्यों मनाया जाता है और वह भी प्रतिवर्ष १४ जनवरी को ही क्यों? हम जानते हैं कि ग्रहों एवं नक्षत्रों का प्रभाव हमारे जीवन पर पड़ता है, इन ग्रहों एवं नक्षत्रों की स्थिति आकाशमंडल में सदैव एक समान नहीं रहती है, हमारी पृथ्वी भी सदैव अपना स्थान बदलती रहती है। यहाँ स्थान परिवर्तन से तात्पर्य पृथ्वी का अपने पक्ष एवं कक्ष-पथ पर भ्रमण से है। पृथ्वी की गोलाकार आकृति एवं अक्ष पर भ्रमण के कारण दिन-रात होते हैं। पृथ्वी का जो भाग सूर्य के सम्मुख पड़ता है वहाँ दिन होता है एवं जो भाग सूर्य के सम्मुख नहीं पड़ता, वहाँ रात होती है। पृथ्वी की यह गति दैनिक गति कहलाती है किंतु पृथ्वी की वार्षिक गति भी होती है और यह एक वर्ष में सूर्य की एक बार परिक्रमा करती है। पृथ्वी की इस वार्षिक गति के कारण इसके विभिन्न भागों में विभिन्न समयों पर विभिन्न ऋतुएँ होती है जिसे ऋतु परिवर्तन कहते हैं। पृथ्वी की इस वार्षिक गति के सहारे ही गणना करके वर्ष और मास आदि की गणना की जाती है, इस काल गणना में एक गणना 'अयन' के संबंध में भी की जाती है, इस क्रम में सूर्य की स्थिति भी उत्तरायण एवं दक्षिणायन होती रहती है, जब सूर्य की गति दक्षिण से उत्तर होती है तो उसे उत्तरायण एवं जब उत्तर से दक्षिण होती है तो उसे दक्षिणायण कहा जाता है।

संक्रमणकाल और मकर संक्रांति

इस प्रकार पूरा वर्ष उत्तरायण एवं दक्षिणायन दो भागों में बराबर-बराबर बँटा होता है, जिस राशि में सूर्य की कक्षा का परिवर्तन होता है, उसे संक्रमण काल कहा जाता है। चूँकि १४ जनवरी को ही सूर्य प्रतिवर्ष अपनी कक्षा परिवर्तित कर दक्षिणायन से उत्तरायण होकर मकर राशि में प्रवेश करता है, अत: 'मकर संक्रांति' प्रतिवर्ष १४ जनवरी को ही मनायी जाती है। चूँकि हमारी पृथ्वी का अधिकांश भाग भूमध्य रेखा के उत्तर में यानी उत्तरी गोलार्द्ध में ही आता है, अत: 'मकर संक्रांति' को ही विशेष महत्व दिया गया। भारतीय ज्योतिष पद्धति में मकर राशि का प्रतीक घड़ियाल को माना गया है जिसका सिर एक हिरण जैसा होता है, किंतु पाश्चात्य ज्योतिषी मकर राशि का प्रतीक बकरे को मानते हैं। हिंदू धर्म में मकर (घड़ियाल) को एक पवित्र पशु माना जाता है। चूँकि हिंदुओं में अधिकांश देवताओं का पदार्पण उत्तरी गोलार्द्ध में ही हुआ है, इसलिए सूर्य की उत्तरायण स्थिति को ये लोग शुभ मानते हैं। 'मकर संक्रांति' के दिन सूर्य की कक्षा में हुए परिवर्तन को अंधकार से प्रकाश की ओर हुआ परिवर्तन माना जाता है। 'मकर संक्रांति' से दिन में वृद्धि होती है और रात का समय कम हो जाता है, इस प्रकार प्रकाश में वृद्धि होती है और अंधकार में कमी होती है। चूँकि सूर्य का स्त्रोत हैं, अत: इस दिन से दिन में वृद्धि हो जाती है, यही कारण है कि 'मकर संक्रांति' को पर्व के रुप में मनाने शेष पृष्ठ २३ पर...

सूरत जिला के ऐतिहासिक प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

Kamal Kishor Dalal (Rathi)
Mob. :- 9426105758
Nilesh K. Dalal (Rathi)
Mob. :- 9825305759

Butter Choice®
Shri Niwas Fab
Mfrs. of : Exclusive Suit Dupattas
C-560, New Textile Market, Ring Road,
Surat, Gujarat, Bharat-395002

भारत को 'भारत' ही क्यों बोला जाए?

भारतीय संविधान के अनुच्छेद १ में दर्ज 'इंडिया दैट इज भारत' को बदलकर केवल भारत करने की मांग उठ रही है, इस सम्बन्ध में सम्पूर्ण देश में एक मुहिम चल रही है जिसका नेतृत्व 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं वरिष्ठ पत्रकार बिजय कुमार जैन कर रहे हैं, इस हेतु एक याचिका सर्वोच्च न्यायालय में दाखिल की गई थी, याचिकाकर्ता की मांग थी कि 'इंडिया' यूनानी शब्द 'इंडिका' से आया है और इस नाम को हटाया जाना चाहिए।

याचिकाकर्ता ने माननीय न्यायालय से अपील की थी कि वो केन्द्र सरकार को निर्देश दे कि संविधान के अनुच्छेद-१ में संशोधन करके 'इंडिया' शब्द को हटाया जाए ताकि भारत को 'भारत' ही बोला जा सके।

भारत के मुख्य न्यायाधीश एस. ए. बोबड़े की अगुवाई वाली तीन सदस्यीय खंडपीठ ने इस मामले में हस्तक्षेप करने से इन्कार करते हुए याचिका को रद्द कर दिया, किन्तु याचिका को एक प्रतिनिधित्व के रूप में केन्द्र सरकार को विचार हेतु भेज दिया, अब यह विचारणीय विषय केंद्र सरकार के पाले में है। भारतीय संस्कृति की गरिमा और राष्ट्रीय अस्मिता को दृष्टिगत रखते हुए संविधान के अनुच्छेद-१ में संशोधन करके 'इंडिया' शब्द को हटाकर देश का नाम केवल 'भारत' ही रखा जाना चाहिए।

भारत का नाम 'भारत' कैसे पड़ा? भारत को इंडिया कब और कैसे कहा जाने लगा? भारत को भारत के अतिरिक्त अन्य किन-किन नामों से पुकारा जाता था? भारत को 'भारत' ही क्यों बोला जाए? उपर्युक्त सभी उठाये जाने योग्य प्रश्नों का ऐतिहासिक और भारत की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में समीचीन उत्तर देने का यथासाध्य प्रयास किया जा रहा है।

भारत का नाम 'भारत' कैसे पड़ा?

भारत का नाम 'भारत' कैसे पड़ा, इस सम्बन्ध में विविध मान्यताएं अधोलिखित हैं-

१. जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र महायोगी भरत के नाम पर इस देश का नाम 'भारतवर्ष' पड़ा।

२. ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार दुष्यंत पुत्र भरत ही 'भारत' नामकरण के पीछे खड़े दिखते हैं।

ग्रन्थ के अनुसार भरत एक चक्रवर्ती सम्राट था, जिसने चारों दिशाओं की भूमि का अधिग्रहण कर एक विशाल साम्राज्य का निर्माण कर अश्वमेघ यज्ञ किया, जिसके चलते उसके राज्य का नाम 'भारतवर्ष' हुआ।

आम तौर पर 'भारत' नाम के पीछे महाभारत के आदि पर्व में एक कथा है- महर्षि विश्वामित्र और अप्सरा मेनका की पुत्री शकुंतला और पुरूवंशी राजा दुष्यंत के बीच गान्धर्व विवाह हुआ था। इन दोनों के पुत्र का नाम भरत था।

ऋषि कण्व ने आशीर्वाद दिया कि 'भरत' आगे चलकर चक्रवर्ती सम्राट बनेंगे और उनके नाम पर इस भूखण्ड का नाम 'भारत' प्रसिद्ध होगा।

३. इसी प्रकार मत्स्य पुराण में उल्लेख है कि मनु को प्रजा को जन्म देने वाले वर और उसका भरण-पोषण करने के कारण 'भरत' कहा गया, जिस खंड पर उसका शासन-वास था, उसे भारतवर्ष कहा गया।

४. हरिवंश पुराण के अध्याय ३३, पृ.५३ तथा बलिया गजेटियर के पृष्ठ ७७ और १३८ में कहा गया है कि भरत, भर जाति के नाम पर इस देश का नाम 'भारत' है।

कई प्राचीन इतिहासकारों की मान्यता है कि भरत जाति **शेष पृष्ठ २४ पर...**

पृष्ठ २२ से... की व्यवस्था हमारे भारतीय मनीषियों द्वारा की गई है।

प्रगति का पर्व - गीता के आठवें अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा भी सूर्य के उत्तरायण का महत्व स्पष्ट किया गया है। श्रीकृष्ण कहते हैं कि 'हे भरतश्रेष्ठ! ऐसे लोग जिन्हें ब्रह्म का बोध हो गया हो, अग्रिमय ज्योति देवता के प्रभाव से जब छह माह सूर्य उत्तरायण होता है, दिन के प्रकाश में अपना शरीर त्यागते हैं, पुन: जन्म नहीं लेना पड़ता है, जो योगी रात के अंधेरे में, कृष्ण पक्ष में ध्रूम देवता के प्रभाव से दक्षिणायन में अपने शरीर का त्याग करते हैं, वे चंद्रलोक में जाकर पुन: जन्म लेते हैं। वेदशास्त्रों के अनुसार, प्रकाश में अपना शरीर छोड़नेवाला व्यक्ति पुन: जन्म नहीं लेता, जबकि अंधकार में मृत्यु प्राप्त होनेवाला व्यक्ति पुन: जन्म लेता है। यहाँ प्रकाश एवं अंधकार से तात्पर्य क्रमश: सूर्य की उत्तरायण एवं दक्षिणायन स्थिति से ही है। संभवत: सूर्य के उत्तरायण के इस महत्व के कारण ही भीष्म ने अपना प्राण तब तक नहीं छोड़ा, जब तक मकर संक्रांति अर्थात सूर्य की उत्तरायण स्थिति नहीं आ गई। सूर्य के उत्तरायण का महत्व छांदोगय उपनिषद में भी किया गया है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि सूर्य की उत्तरायण स्थिति का बहुत ही अधिक महत्व है। सूर्य के उत्तरायण होने पर दिन बड़ा होने से मनुष्य की कार्यक्षमता में भी वृद्धि होती है जिससे मानव प्रगति की ओर अग्रसर होता है। प्रकाश में वृद्धि के कारण मनुष्य की शक्ति में भी वृद्धि होती है और सूर्य की यह उत्तरायण स्थिति चूँकि मकर संक्रांति से ही प्रारंभ होती है, यही कारण है कि 'मकर संक्रांति' को पर्व के रुप में मनाने का प्रावधान किया गया है और इसे प्रगति तथा ओजस्विता का पर्व माना गया जो कि सूर्योत्सव का द्योतक है।

मकर संक्रान्ति का ऐतिहासिक महत्व

ऐसी मान्यता है इस दिन भगवान भास्कर अपने पुत्र शनि से मिलने स्वयं उसके घर जाते हैं, चूँकि शनिदेव मकर राशि के स्वामी हैं, अत: इस दिन को 'मकर संक्रान्ति' के नाम से जाना जाता है। महाभारत काल में भीष्म पितामह ने अपनी देह त्यागने के लिये 'मकर संक्रान्ति' का ही चयन किया था।

'मकर संक्रान्ति' के दिन ही गंगाजी भगीरथ के पीछे-पीछे चलकर कपिल मुनि के आश्रम से होती हुई सागर में जाकर मिली थी।

मकर संक्रान्ति और नये पैमाने - अन्य त्योहारों की तरह लोग अब इस त्यौहार पर भी छोटे-छोटे मोबाइल-सन्देश एक दूसरे को भेजते हैं, इसके अलावा सुन्दर व आकर्षक बधाई-कार्ड भेजकर इस परम्परागत पर्व को और अधिक प्रभावी बनाने का प्रयास किया जाता है।

पृष्ठ २२ से... के लोगों ने आर्य और अनार्य दोनों पर विजय प्राप्त कर अपने भरतगन कबीले के नाम पर अपने साम्राज्य का नाम 'भारतवर्ष' रखा, यही भरत जाति आगे चलकर भर जाति के नाम से प्रसिद्ध हुयी।

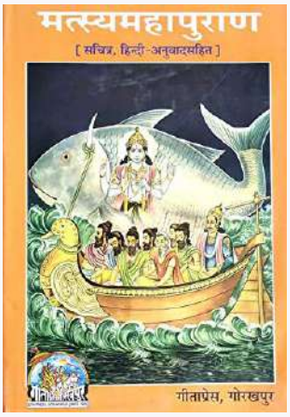

इस प्रकार स्पष्ट है कि मत-मतान्तर भले ही हो सकते हैं, किन्तु ऐतिहासिक दृष्टि से यह भली प्रकार स्पष्ट है कि इस भू-खंड का नाम 'भारत' ही था।

भारतवर्ष के अन्य नाम -

पूर्व में भारतवर्ष के भू-भाग को जम्बूद्वीप, भारतखंड, हिमवर्ष, अजनाभ वर्ष, भारतवर्ष, आर्यावर्त, हिन्द, हिन्दुस्तान और इंडिया आदि विविध नामों से पुकारा जाता था।

भारत को 'इंडिया' नाम किसने दिया?

भारत के अंग्रेजी नाम 'इंडिया' की उत्पत्ति सिंधु शब्द से हुई जो यूनानियों द्वारा चौथी सदी ईसा पूर्व से प्रचलन में था। इंडिया नाम पुरानी अंग्रेजी में ९वीं सदी और आधुनिक अंग्रेजी में १७वीं सदी में मिलता है।

ज्ञातव्य है कि १८वीं शताब्दी में अंग्रेज भारत में व्यापार करने के उद्देश्य से आए, उन्हें 'हिंदुस्तान' और 'भारतवर्ष' शब्द बोलने में कठिनाई होती थी।

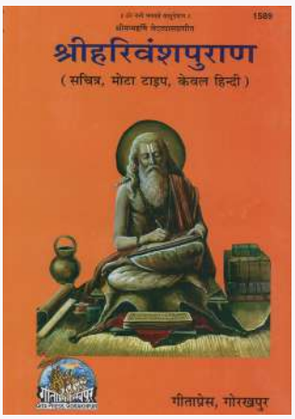

इतिहासकारों के माध्यम से उन्हें ज्ञात हुआ कि प्राचीन सिंधुघाटी सभ्यता को 'इंडस वैली' और भारत में बहने वाली प्राचीन जलधारा सिंधुनदी को 'इंडस' के नाम से जाना जाता है, तो उन्होंने भारत का नाम बदलकर 'इंडिया' रख दिया। इस प्रकार भारत को 'इंडिया' नाम देने के पीछे अंग्रेजों का मुख्य हाथ रहा है। लगभग तीन सौ वर्षों के भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान भारत सम्पूर्ण विश्व में 'इंडिया' के नाम से प्रसिद्ध हो गया। सन् १९४७ ई. में देश को स्वाधीनता मिली। १९४९ ई. में जब भारत का संविधान बना तो भारत की संविधान निर्मात्री सभा ने भारतवर्ष के साथ-साथ 'इंडिया' को भी संविधान में शामिल कर लिया, इसी कारण हमारे देश के संविधान के अनुच्छेद-१ में 'इंडिया दैट इज भारत' वर्णित है जिसे हटाकर केवल 'भारत' रखने की मुहिम सम्पूर्ण देश में पूरे वेग से चल रही है।

भारत को 'भारत' ही क्यों बोला जाए?

अब यह एक यक्ष प्रश्न है कि 'भारत को 'भारत' ही क्यों बोला जाए'? भारतीय संविधान के अनुच्छेद -१ में वर्णित 'इंडिया दैट इज भारत' को संशोधित कर केवल देश का नाम 'भारत' रखने से क्या फर्क पड़ेगा? देश का इससे क्या मान बढेगा? इस प्रकार के अनेक प्रश्न हमारे मन-मस्तिष्क में उभर सकते हैं। भारत को 'भारत' ही क्यों बोला जाए, इसके समर्थन में निम्नांकित तर्क दृष्टव्य हैं-

१. किसी भी व्यक्ति अथवा देश को एक ही नाम से जाना जाता है तो हमारे देश का नाम 'इंडिया दैट इज भारत' क्यों? हमारे देश को केवल एक ही नाम 'भारत' से जाना जाए, यही उचित है।

२. यदि भारतीय संविधान निर्मात्री सभा की प्रोसिडिंग्स का गंभीरता से अध्ययन किया जाए तो ज्ञात होगा कि अधिकांश सदस्य इसी पक्ष में थे कि हमारे देश का नाम केवल 'भारत' रखा जाए। 'इंडिया' शब्द को संविधान में सम्मिलित नहीं किया जाए। ऐसा प्रतीत होता है कि अगस्त १९४७ ई. में देश की स्वाधीनता के बाद भी हम ब्रिटिश दासता के प्रभावों से नहीं उभर सके थे, हमारी मानसिक दासता के प्रतीक के रूप में हमने हमारे संविधान में 'इंडिया दैट इज भारत' को सन्निहित कर दिया था।

३. अब समय आ गया है कि देश को उसके मूल और प्रामाणिक नाम 'भारत' से पहचाना जाए, विशेषकर जब हमारे शहरों को भारतीय लोकाचार के साथ पहचानने के लिए नाम दिए जा रहे हैं।

४. प्रत्येक देश के लिए 'राष्ट्रीय अस्मिता' उसकी सांस्कृतिक धरोधर, उसकी

संस्कृति अहं होती है। देश के अंग्रेजी नाम 'इंडिया' को हटाने से हमारी अपनी राष्ट्रीयता विशेषकर हमारी आने वाली पीढ़ी में गर्व की भावना उत्पन्न होगी।

५. वर्तमान काल में हमारे देश को 'भारत' नाम दिए जाने की मांग का एक मुख्य कारण यह भी है कि - हम भावनात्मक रूप से अपनी मातृभूमि 'भारत' शब्द से जुड़े हुए हैं। पुराणों एवं महाभारत जैसे प्राचीन ग्रन्थों में मातृभूमि के रूप में 'भारत' का ही गुणगान किया गया है। 'भारत' शब्द हमारे मन में देश प्रेम की भावना उत्पन्न करता है किन्तु 'इंडिया' अथवा 'हिंदुस्तान' जैसे शब्द नहीं करते। हमारे देश के कई नामों में से केवल 'भारत' शब्द ही ऐसा है जो हमारी प्राचीनतम विरासत को व्यक्त करता है, क्या यह उचित होगा कि हम अपनी प्राचीनतम विरासत को, हमारी गौरवपूर्ण संस्कृति को भूल जाएं? कदापि नहीं, इसीलिए 'इंडिया' शब्द को हटाकर देश का नाम केवल मात्र 'भारत' रखना समीचीन होगा।

६. हमने ईश्वर को नहीं देखा है, किन्तु उसमें हमारी आस्था है, इसी कारण उसकी पूजा-अर्चना करते हैं, उसकी अपरिमित शक्ति में विश्वास रखते हैं, ठीक इसी प्रकार हम देशवासियों की आस्था देश का नाम 'भारत' रखने में है, 'इंडिया' शब्द से भारतीयों का कोई सरोकार नहीं है।

संक्षेप में देश की एकता, अखंडता, हमारी प्राचीनतम सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करने, देशवासियों की मनोभावना को तरजीह देने, युवापीढ़ी में देशप्रेम की भावना को प्रज्वलित करने, राष्ट्रीय अस्मिता को बरकरार रखने, मानसिक दासता के चिन्हों को ध्वस्त करने के उद्देश्य से हमारी मातृभूमि का नाम 'भारत' ही रखा जाए, यही समय की मांग है, राष्ट्र की पुकार है। जय भारत!

- प्रो. मिश्री लाल मांडोत
शिक्षाविद्, इतिहासकार,
राजनीतिक विश्लेषक एवं वरिष्ठ लेखक
मो. ७८७७४६८३३७

Why Bharat Only?
– Why the debate refuses to subside and is garnering more attention?

By Somesh Arora, Advocate, Ex-IRS and Former Commissioner of Customs.

When approached by "Main Bharat Hun Foundation" to contribute my views on the proposition of need to amend Article 1 (1) of Bhartiye samvidhaan (Constitution of India) which reads 'India i.e. Bharat shall be a Union of States' . I agreed to contribute my bit and support knowing fully well, that the idea to do so was neither a new germination nor had been lacking in debate earlier, both at judicial and legislative fora. It also made a greater sense to approach the legislature for consideration of request rather than frequent knocking at the doors of Judiciary, as the issue involved has been often debated cutting across party lines in the parliament and earlier since the days of drafting of the constitution. And which now with the advent of social media in last decade or so, has been engaging greater informed debate and support of more and more people of Bharat.

The first thought process over the issue, therefore, was- whether the efforts this time are going to be different from the previous attempts and if so, how?

We cannot remain ignorant of the fact and must admit that the debate of having Bharat as the constitutional name of the country is as old as or even older than the Constitution of the country. Not only the name Bharat, but also the phraseology of Article 1, was widely debated by Shri H. V. Kamath in presence of Shri B. R. Ambedkar and others as is documented in the proceedings of constituent assembly of India debates (proceedings)volume IX, dated 18.09.1949. This despite only shorter time being available for drafting elaborate Constitution document. Following extracts from the resolution moved by Shri H. V. Kamath in the constituent assembly bring out the contours of the issue, as was then debated:

" Shri H. V. Kamath : I move "That in amendment No. 130 of List IV (Eighth Week), for the proposed clause (1) of article 1, the following be substituted:-

'(1) Bharat or, in the English language, India, shall be a Union of States.' " or, alternatively,

"That in amendment No. 130 of List IV (Eighth Week), for the proposed clause (1) of article 1, the following be substituted :

1(1) Hind, or, in the English language, India, shall be a Union of States."

Taking my first amendment first, amendment No. 220, it is customaryamong most peoples of the world to have what is called a Namakaran or a naming ceremony for the new-born. India as a Republic is going to be born very shortly a nd naturallythere has been a movement in the country a mong many sections--almost all sections-of the people that this birth of the new Republic should be accompanied by a Namakaran ceremony as well. There are various suggestions put forward as to the proper name which should be given to this new baby of the Indian Republic. The prominent suggestions have been Bharat, Hindustan, Hind and Bharatbhumi orBharatvarsh and names ofthat kind. At this stage it would be desirable and perhaps profitable also to go into the question as to what name is best suited to this occasion of the birth of the new baby-the Indian Republic. Some say, why name the baby at ail? India will suffice. Well and good. I f there was no need for a Namakaran ceremony we could have continued India, but if we grant this point thatthere must be a new nameto this baby, then of coursethe question arises as to whatname should be given.

Now, those who argue for Bharat or Bharatvarsh or Bharatbhumi, take their stand on the fact that this is the most ancient name of this land. Historians and philologists have delved deep into this matter of the name of this country, especiallythe origin of this name Bharat. All of them are not agreed a s to the genesis of this name Bharat. Some ascribe it to the son of Dushyant and Shakuntala who was also known as "Sarvadamana" or all-conqueror and who established his suzerainty and kingdom in this ancient land. After him this land cameto be known as Bharat. Another school of research scholars hold that Bharat dates back to Vedic ....

The Honourable Dr. B. R. Ambedkar (Bombay: General): Is it necessary to trace all this? I do not understand the purpose of it. It may be well interesting in some other place. My Friend accepts the word "Bharat". The onlything is that he has got an alternative. I am very sorry but there ought to be some sense of proportion, in viewof the limited time before the House."

It was thus clear that Honorable Dr. B. R. Ambedkar was only interested notto have elaborate debate about the naming of Bharat considering the limited time that was available with Constituent Assembly to draft and adopt the elaborate document called '**Bharat ka Samvidhan**' or Constitution of India, but was never opposed to debate and made it an "open and shut" matter.

It can also be appreciated that Honorable Dr. B. R. Ambedkar had in no way closed the possibility of future debate about the namakaran of India. Since, adoption of constitution in 1950, there have been sporadic attempts to raise the debate in the Parliament as well as in the Supreme Court of India, cutting across party lines of political groups. However, the change which has occurred since the earlier debates, is that now informed members of public, with research tools available in social media, are more vocally demanding the same. At least, twice in recent years, that is in 2015 and 2020, apex court was moved to seek direction for legislature/Government to amend constitution to incorporate 'Bharat', instead of 'India that is Bharat'. However, both times Supreme Court did not agree with the petitioners and relegated them to move through legislature or support of Central Government. The response of the Supreme Court appears appropriate, considering that amendments of constitution is necessarily prerogative of legislature and courts in normal circumstances may not like to involve themselves in any legislative business, unless the executive supports the move. The campaign managers therefore, will need to move at two levels. Firstly, enlist support of Parliamentarians and Members of Legislature and Councils etc. and secondly, to raise voice in public and get substantial support from civil society.

यदि मुझे विश्वास हो जाये कि 'हिन्दी' राष्ट्रीय एकता में बाधक है, तो मैं 'हिन्दी' को सदा के लिए राष्ट्रभाषा पद से हटा लेने का प्रस्ताव करूँगा - सेठ गोविन्ददास

On ground sufficient support of notions of patriotism exists is a proposition vindicated by the earlier moves. The move to rename India as Bharat was in the recent years moved by Congress M. P. of Goa Mr. Shantaram Naik in 2010 and again on 09.08.2012 in Rajya Sabha. His main plank of arguments was based on nationalism and patriotism to bring the change. Prior to this in April, 2004, Samajwadi parties too had proposed the name Bharat for India. What then has so far eluded a wide legislative consensus to see the amendment through? It appears that the attempts made were more to create a patriotic fervor only or the movers of the bill could not (through their parties) have sufficient numbers in parliament or moves were designed simply to create a debate point as a concept and to allow it to become reality later. Probably the last ,was the targetted approach.

The following frequently coming to mind questions and answers can support the notion that Bharat and not India should be an exclusive name even in our Constitution.

Question 1. Where from the name India originated?

Reply - Connected with the river Sindhu, which with Persian became Hindu the distorted named India was derived from Greek Indike. Etymologically it meant inhabited land in and around the Indus River. Therefore, its clear expression' India' which was distorted version of Indike was a name given by the people, who hardly had anything to do with India or who never ruled India, but was a distorted name picked up by the British and has continued as such even afterthey have left India.

Question 2. How many countries have bilingual names?

Reply - With exception of India/Bharat it appears only other country having different names in English and colloquial language is Germany/ Deutschland.

Question 3. How many common wealth/other vanquished countries after independence have changed their names from the one used by British/the victorious?

Reply - While few like Pakistan, Bangladesh were named first time after independence, others like Ceylon to Sri Lanka, Burmato Myanmar, Democratic Kampuchea to Cambodia, Irish Free State to Ireland in 1937, Swaziland in Africa to Eswatini, Rhodesia to Zimbabwe in 1980 etc. changed their names after independence and after coming into existence of Bharat.

Question 4. Does name India represent multicultural and multilingual society and should not be done away with?

Reply- Multiculturalism and multilingualism has nothing to do with the name of the country being of or other language. In fact many modern multicultural societies like Australia, Canada and U.S.A. have only one name and are not dependent upon name spoken by the victorious nationals of the past. Bharat itself for millenniums remained a shining example of multi-religious, multi-cultural and pluralistic society.

Question 5. What justifies the name Bharat?

Reply- Apart from the fact that many countries like Sri-Lanka (Ceylon), Myanmar (Burma), Rhodesia to Zimbabwe which were former British Colonies have under gone name change since independence of Bharat (India). Bharat is the most natural contender as constitution framers have already approved it and history of the country justifies it as all-embracing name, which was its long lasting identity among the settled people as well as in the eastern countries like Burma, Siam etc. Since ancient times our nation has been termed as Bharat (Sanskrit original name). Various ancient versions pertaining to the deriving of the name are as follows:

According to **Mahabharata** the country was called Bharatvarsha after the king named Bharata Chakravarti, who was a legendary emperor and the founder of Bharata Dynasty of which the Pandavas and Kauravas were the descendents. He was son of King Dushyanta of Hastinapur and Queen Sakuntala. Also, a descendant of Kshatriya Varna. Bharata had conquered all of Greater India, and had united in to a single entity which was named after him as " Bharatvarsha".

In Vishnu Purana "This country is known as Bharatvarsha since the times the father entrusted the kingdom to the son Bharata and he himself went to the forest for ascetic practices" .

Bharata is the official Sanskrit name of the country, Bharata Ganarajya. The Sanskrit word Bharata describes Agni. It also means " One who is engaged in search of Knowledge".

India' s real name is Bharat and it was kept after the name of Bharat Chakravarti the eldest son of First Jain Tirthankar & it is said that it is solely gift of Jainism in terms of name Bharat and its original sourceof Civilisation of Bharat today called India.

Therefore it is clear that for different reasons name "Bharat" had found wide acceptance both in Hinduism and Jainism.

The organizers of the 'Main Bharat hoon' foundation certainly deserve kudos in making one more valiant attempt to get Ma Bharati its due, the path may be difficult but certainly is not as much as getting Bharat its independence or maintaining its independence. If that could be done by-we the people of Bharat, even this too will be - some day in near future.

- Advertorial

कृपया मुझे INDIA ना बोलें क्योंकि
मैं भारत हूँ

रविंद्र आर्य
अध्यक्ष बिन्दल ग्रुप
हिसार निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९९०९०१८८६०

रविंद्र जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'सूरत' मेरी कर्मभूमि है इसीलिए मेरे लिए विशेष महत्व रखता है पहले और आज के सूरत में बहुत परिवर्तन आ गया है, पहले यहां की आबादी मात्र ८ लाख से कम थी, आज करीब ५० लाख से भी अधिक है, इतने सालों में 'सूरत' सबसे गंदा शहर से सबसे खूबसूरत शहर के रूप में बदल गया है। 'सूरत' एक ऐसा शहर है जो हर कदम बढ़ता रहा है इसीलिए इसे 'फास्टेस्ट ग्रोइंग सिटी इन द वर्ल्ड' भी कहा जाता है। यह स्मार्ट सिटी के रूप में भी जाना जाता है। यहां आने वाले हर किसी को अपने में समाहित कर लेता है, यहां के लोग बहुत ही शांतिप्रिय हैं। यहां की सड़कें बहुत ही चौड़ी हैं, सबसे अधिक फ्लाईओवर 'सूरत' में ही बने हैं, इसीलिए ट्रैफिक जैसी कोई समस्या नहीं है। यहां हर राज्य व समाज के लोग बसे हैं, यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही अच्छा है। सब एक दूसरे से मिलजुल कर रहते हैं। अग्रवाल समाज बहुत बड़ी संख्या में है और उनका सूरत की उन्नति में बहुत बड़ा योगदान है। 'सूरत' के सामाजिक विकास में यहां के प्रवासियों की अहम भूमिका रही है, उनके द्वारा यहां कई स्कूल, कॉलेज, सामाजिक व धार्मिक भवन बनाए गए हैं। यहां आने वाला हर व्यक्ति रोजगार अवश्य पाता है बस उन्हें मेहनत करनी है और अपना मुकाम पाना है, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में अपना विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि अपने देश को हमें भारत ही बोलना-लिखना चाहिए, लेकिन देश के बाहर इंडिया नाम से जाना जाता है। जापान को जापान के लोग निपोन भी कहते हैं जो कि संवैधानिक नहीं है, हम सभी उसको जापान के नाम से ही जानते हैं। 'भारत' हमारा ऐतिहासिक नाम है अतः हमारे देश की पहचान 'भारत' से ही बनी रहे, यह प्रयास किया जाना चाहिए।

रविंद्र जी मूलतः हरियाणा स्थित हिसार के नजदीक 'गुरेरा' गांव के निवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा 'कोलकाता' में संपन्न हुई है, कोलकाता विश्वविद्यालय से वाणिज्य स्नातक की शिक्षा ग्रहण की। १९८० से आप 'सूरत' में बसे हुए हैं व बिंदल सिल्क मिल्स प्राइवेट लिमिटेड में सीएमडी के रूप में कार्यरत हैं, साथ ही आप सामाजिक क्षेत्र में भी सक्रिय रहते हैं। पलसाना एन्वीरो प्रोटेक्शन एवं विचार टेलिविजन नेटवर्क के अध्यक्ष है, रोटरी क्लब ऑफ सूरत के सीफेस के पूर्व अध्यक्ष एवं कनफेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्री, दक्षिण गुजरात प्रोसेसर असोशिएशन, दक्षिण गुजरात चेंबर इत्यादी में विभिन्न पदों पर रहे है। इसके साथ ही अग्रसेन विकास ट्रस्ट के संस्थापक सदस्य, अग्रवाल विद्या विहार एवं महाराजा अग्रसेन इंटरनेशनल स्कूल के ट्रस्टी हैं। जय भारत!

कमल दलाल (राठी)
व्यवसायी व समाजसेवी
जैसलमेर निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४२६१०५७५८

कमल जी अपनी कर्मभूमि सूरत की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'सूरत' की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहां जो भी अपनी मेहनत व ईमानदारी से काम करता है तो वह निरंतर आगे बढ़ता ही रहता है, उसे पीछे देखने की आवश्यकता नहीं पड़ती। मेहनत वालों का ही है औद्योगिक शहर 'सूरत'। औद्योगिक दृष्टिकोण की बात की जाए पहले के मुकाबले आज बहुत अधिक विकास हो रहा है, नई-नई तकनीक व यंत्रों का उपयोग किया जा रहा है, जिससे उद्योग व्यापार दिन-प्रतिदिन बढ़ते ही जा रहे हैं। कपड़ा उद्योग में सबसे अधिक राजस्थानी समाज का वर्चस्व है। 'सूरत' में पूरे भारत के सभी क्षेत्र व प्रदेश के लोग बसे हैं, इसीलिए इसे 'मिनी भारत' भी कहा जाता है, यहां की ८०% आबादी प्रवासियों की ही है। यहां मिली-जुली संस्कृति दिखाई देती है, सभी अपने त्यौहार व धार्मिक, सामाजिक कार्यों को बड़े ही हर्षोल्लास व धूमधाम से मनाते हैं। यहां हर समाज की सामाजिक संस्थाएं कार्यरत हैं जो समाज क्षेत्र में सदैव अग्रसर रहती है। अग्रवाल समाज के यहां कई विद्यालय और भवन बने हुए हैं। यहां का अग्रवाल समाज हर क्षेत्र में चाहे वह व्यापार हो, सामाजिक हो या धार्मिक अपना विशेष महत्व बनाए हुए है। सूरत के प्रसिद्ध स्थानों में अंबाजी का मंदिर, इस्कॉन टेंपल, स्वामीनारायण मंदिर विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जहां दर्शन करने हर क्षेत्र से लोग जाते हैं, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में अपना विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि अवश्य ही अपने देश की पहचान तो सिर्फ 'भारत' से ही रहनी चाहिए, इंडिया तो अंग्रेजों द्वारा थोपा गया नाम है और मैं इस मत से पूर्ण सहमत हूं कि अपने देश का नाम एक ही रहना चाहिए चाहे भाषा कोई भी हो।

कमल जी मूलतः राजस्थान स्थित 'जैसलमेर' के निवासी हैं। आपका जन्म और स्नातक तक की शिक्षा गुजरात के जेतपुर में संपन्न हुई है। कुछ वर्षों तक आप जेतपुर में कॉटन उद्योग से जुड़े रहे, पिछले ३० वर्षों से आप 'सूरत' में बसे हैं और टेक्सटाइल इंडस्ट्रीज से जुड़े हैं। आप सामाजिक कार्यों में भी विशेष सक्रिय रहते हैं। महेश मित्र मंडल जैसलमेर के अध्यक्ष व कोषाध्यक्ष रहे हैं। जय भारत!

गजानन राठी
प्रदेश अध्यक्ष माहेश्वरी सभा गुजरात
नोखा निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२४०५१९३१

गजानन जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' के विशेषता का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पिछले ३५ सालों में 'सूरत' में बहुत परिवर्तन आ गया है। पहले 'सूरत' शहर की आबादी मात्र १० से १५ लाख ही थी पर आज यहां की आबादी ७० लाख से भी अधिक है। सूरत का विकास चहूं दिशा में हुआ है और यह सबसे तेजी से विकसित होने वाला शहर बन गया है, यहां के रिंग रोड में एक ही सड़क पर आज कई सड़कें बन गई हैं और सभी व्यवस्थित व चौड़ी सड़कें हैं। पहले सूरत सबसे गंदा शहर हुआ करता था पर आज यह भारत का दूसरे स्थान का सबसे स्वच्छ शहर बन चुका है, यहां की महानगरपालिका द्वारा शहर का रखरखाव बड़े ही व्यवस्थित ढंग से किया जाता है, जिससे यहां के नागरिकों को कभी कोई परेशानी नहीं होती। उद्योग व्यापार में भी पिछले कुछ सालों में बहुत तेजी से प्रगति हुई है, इसीलिए यहां देश के विभिन्न भागों से लोग व्यापार व रोजगार हेतु बसे हैं। यहां सभी धर्म समाज के लोग आपसी मेल-मिलाप के साथ निवास करते हैं। यहां का वातावरण हमेशा ही सौहार्दपूर्ण बना रहता है। यहां सभी धर्म और समाज की अपनी-अपनी सामाजिक व धार्मिक संस्थाएं कार्यरत हैं। यहां माहेश्वरी समाज के लगभग ८५०० परिवार हैं। माहेश्वरी समाज के लगभग २२ संस्थाएं कार्यरत है और माहेश्वरी समाज द्वारा यहां दो स्कूल हैं व दो माहेश्वरी भवन बनाया गया है जो पूर्णत: सुविधायुक्त है। पर्यटन की दृष्टि से यहां विशेष कुछ नहीं पर यहां का चौपाटी और रिसॉर्ट है जहां लोग जाना पसंद करते हैं। यहां कई विशेष मंदिर भी हैं जो लोगों की श्रद्धा का मुख्य केंद्र है, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश की पहचान सिर्फ भारत से ही रहनी चाहिए क्योंकि यही हमारे देश का मूल नाम है जो सदियों से चला आ रहा है।

गजानन जी मूलतः राजस्थान स्थित बीकानेर जिले में स्थित 'नोखा' के निवासी हैं। आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा 'नोखा' में ही संपन्न हुई है। शिक्षा समाप्ति के बाद आप १० सालों तक पश्चिम बंगाल के कुचविहार रहे और जूट व तम्बाकू के व्यवसाय से जुड़े रहे। १९८५ में आप 'सूरत' में आए और टेक्सटाइल उद्योग से जुड़े। यहां माहेश्वरी समाज की कई संस्थाओं के कार्यकारिणी में सक्रिय हैं। माहेश्वरी सभा गुजरात के प्रदेश अध्यक्ष के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। गुजरात चैंबर्स ऑफ़ कॉमर्स के भी कार्यकारणी सदस्य हैं। सेंट जॉन एंबुलेंस एसोसिएशन व रेड क्रॉस से भी जुड़े हैं। माहेश्वरी समाज के तत्वाधान में विभिन्न धार्मिक स्थलों पर बने आवास एवं राजस्थान के कोटा, दिल्ली, मुंबई स्थलों पर छात्रों के लिये बने होस्टल में भी ट्रस्टी हैं। अन्य कई संस्थाओं में भी विशेष पदों पर सक्रिय हैं। जय भारत!

मनोज अग्रवाल
अध्यक्ष फेडरेशन ऑफ सूरत टेक्सटाइल ट्रेड एसोसिएशन (फोस्टा)
हिसार निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२५१५७१२७

मनोज जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पिछले कुछ वर्षों में 'सूरत' में बहुत ही परिवर्तन आया है और यह परिवर्तन न सिर्फ टेक्सटाइल इंडस्ट्रीज बल्कि 'सूरत' के हर क्षेत्र में विकास हुआ है, चाहे वह उद्योग व्यापार हो, जनसंख्या हो, यहां का इंफ्रास्ट्रक्चर हो या लोगों का रहन-सहन स्तर सभी क्षेत्रों में 'सूरत' ने बहुत प्रगति की है, अन्य शहरों की तुलना में 'सूरत' ही सबसे तेज प्रगति वाला शहर कहा जाता है और आज भी यह प्रगति निरंतर गतिशील है। यहां कपड़ा उद्योग व डायमंड क्षेत्र का विकास तो हुआ ही है साथ ही इनसे जुड़े अन्य उद्योग धंधों में भी गति आई है। 'सूरत' को मिनी भारत कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी, क्योंकि यहां भारत के हर प्रांत, हर क्षेत्र के लोग व्यापार, उद्योग, रोजगार हेतु बसे हुए हैं। टेक्सटाइल क्षेत्र की बात की जाए तो यहां लगभग १५ लाख से अधिक लोग टैक्सटाइल्स से जुड़े हैं, जिनमें से १२ से १३ लाख यूपी, बिहार, उड़ीसा के लोग हैं, जो कारीगर या रोजगार से जुड़े हैं। 'सूरत' में आने वाला हर व्यक्ति रोजगार अवश्य पाता है, वह कभी भूखा नहीं सोता, 'सूरत' की सामाजिक स्थिति भी निरंतर प्रगति की ओर है, यहां हर समाज-हर धर्म के लोगों का आपसी सामंजस्य बहुत ही उत्तम है। एक दूसरे के साथ हमेशा मेल-मिलाप के साथ रहते हैं। यहां के लोग सामाजिक कार्यों में भी बढ़-चढ़कर शामील होते हैं, इसीलिए यहां विभिन्न समाजों की कई संस्थाएं बनी हुई हैं। सूरत को ब्रिज सिटी के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि यहां भारत के अन्य क्षेत्रों की तुलना में सबसे अधिक फ्लाईओवर बने हैं, जिससे यहां के लोगों के लिए आवागमन की सुविधा बहुत ही उत्तम है, ऐसी ही अन्य कई विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम एक ही होना चाहिए 'भारत' इसका मैं पूर्णत: समर्थन करता हूं, पर यह कार्य भारत सरकार द्वारा ही संभव है और उन्हीं के द्वारा पूरा किया जा सकता है।

मनोज जी मूलतः हरियाणा स्थित 'हिसार' के निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'हिसार' में ही संपन्न हुई है। पिछले ४० वर्षों से आप 'सूरत' में बसे हुए हैं और टैक्सटाइल इंडस्ट्री से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। 'सूरत' की सबसे बड़ी टेक्सटाइल इंडस्ट्रीज की संस्था 'फेडरेशन ऑफ सूरत टैक्सटाइल एंड ट्रेड एसोसिएशन' के अध्यक्ष के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे हैं, साथ ही अग्रवाल समाज की विभिन्न संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

यदि बढ़ाना है भारत को विकास की ओर, तो दें हिंदी भाषा पर जोर-बिजय कुमार जैन

अशोक शाह
प्रोफेसर व समाजसेवी
बाड़मेर निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८७९५१००४५

अशोक जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' के बारे में कहते हैं कि पहले और आज के 'सूरत' में सब कुछ परिवर्तन हो चुका है। पहले 'सूरत' एक संकुचित क्षेत्र हुआ करता था, जहां गंदगी का वास था पर १९९२ के बाद जब लोगों में जागृति आई, तब 'सूरत' वासियों व महानगर पालिका के प्रयासों से 'सूरत' आज स्वच्छ शहर के रूप में जाना जाता है। सड़कें चौड़ी हो चुकी हैं, यहां का इंफ्रास्ट्रक्चर भी बहुत तेजी से बढ़ा है, इसीलिए आज 'सूरत' को फ्लाईओवर सिटी के नाम से भी जाना जाता है, भारत में सबसे अधिक फ्लाईओवर 'सूरत' में ही हैं। लोगों के आवागमन की सुविधा भी अच्छी हो गई है। यहां की महानगरपालिका द्वारा हर सुविधाएं प्रदान की जाती हैं। यहां का डिजास्टर मैनेजमेंट भी सक्रिय है, किसी भी प्रकार की प्राकृतिक आपदा के लिए 'सूरत' हमेशा सतर्क रहता है। यहां के व्यापार की बात की जाए तो उद्योग व्यापार से जुड़ा हर व्यक्ति एक दूसरे से संबंध रखता है व सहयोग की भावना को लिए हुए सहकार्य के लिए हमेशा तत्पर रहता है। हर स्तर का व्यक्ति अपने-अपने कार्य क्षेत्र में सक्रिय है। टेक्सटाइल इंडस्ट्रीज के साथ-साथ डायमंड इंडस्ट्रीज से भी जुड़े बड़े-छोटे उद्योग व्यवसाय यहां सक्रिय हैं। आज सूरत मेट्रोपोलिटन सिटी के रूप में जाना जाता है, राजस्थान, हरियाणा, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा पंजाब जैसे सभी क्षेत्र से लोग यहां आकर बसे हुए हैं। सभी ने यहां के कल्चर, खान-पान को अपनाया है। एक दूसरे से पुरी तरह से घुल-मिल गए हैं, किसी भी प्रकार के सामाजिक कार्य को एकजुट होकर करते हैं, यहां का वातावरण बहुत ही शांत प्रिय है। क्राइम का रेट बहुत ही कम है, यहां हर तरह के खानपान आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं, इसीलिए यहां होटल बिजनेस भी बढ़ा है, यहां की सुंदरता की बात की जाए तो सूरत को गार्डन सिटी के रूप में भी जाना जाता है, क्योंकि यहां असंख्य उद्यान बने हुए हैं। घूमने-फिरने के लिए लोग डुमास बीच जाना पसंद करते हैं। रात के समय फ्लाईओवर की लाइटिंग हमें विदेशी शहर का अनुभव देती है। यहां म्यूज़ियम, प्राणी संग्रहालय, एक्वेरियम, साइंस सेंटर भी बने हुए हैं। ताप्ती नदी के किनारे यहां कहीं पौराणिक मंदिर हैं, जो लोगों की आस्था से जुड़ा है ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश की पहचान सिर्फ 'भारत' से ही रहनी चाहिए क्योंकि यह भरत खंड के नाम से हमेशा से ही विख्यात रहा है।

अशोक जी मूलतः राजस्थान स्थित बाड़मेर के निवासी हैं। आपका जन्म व प्रारंभिक शिक्षा बाड़मेर में ही संपन्न हुई है। तत्पश्चात उच्च शिक्षा आपने अहमदाबाद से ग्रहण की। आपने इंजीनियरिंग क्षेत्र में उपाधि प्राप्त की है और नेशनल इंस्टीटयूट ऑफ टेक्नॉलाजी में प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय है। स्थानीय माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष रहे हैं। सूरत माहेश्वरी सभा के कार्यकारिणी सदस्य हैं, शिक्षा समिति से भी जुड़े हुए हैं अन्य कई संस्थाओं में भी संलग्न हैं। जय भारत!

आनंद जिंदल
अध्यक्ष सूरत आडतिया कपड़ा असोसिएशन
मुजफ्फरनगर निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२५१२३६३५

आनंद जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि प्राचीन काल से ही 'सूरत' का अपना विशेष महत्व रहा है इसलिए विदेशी आक्रांता चाहे वह अंग्रेज हो या मुगल सभी के आकर्षण का प्रमुख केंद्र रहा है क्योंकि सूरत व्यापार उद्योग के लिए एक महत्वपूर्ण भूमि के रूप में जाना जाता है। पहले के मुकाबले आज का 'सूरत' बहुत ही परिवर्तित हो चुका है और यह परिवर्तन विशेषकर मोदी जी के कार्यकाल के कारण ही संभव हुआ है। यहां डायमंड और कपड़ा उद्योग विशेष रूप से उल्लेखनीय है जिसके लिए 'सूरत' पूरे विश्व में जाना जाता है, आए दिन नई-नई तकनीकों का उपयोग किया जाता है। वर्तमान में सूरत में ४५० से भी अधिक प्रोसेसिंग हाउस है जो कपड़ा उद्योग से सक्रिय हैं, चुंकि 'सूरत' औद्योगिक नगरी है इसलिए 'भारत' के सभी क्षेत्र के लोग यहां बसे हुए हैं। यहां रहने वाला हर कोई रोजगार अवश्य पाता है। यहां हर धर्म और संस्कृति के लोग अपने संस्कारों व धर्म से जुड़े हुए हैं। यहां समय-समय पर विभिन्न धार्मिक व सामाजिक कार्यक्रम संपन्न किए जाते हैं, जिसमें लोगों का उत्साह देखते ही बनता है। यहां का खानपान भी बहुत ही उत्तम है। यहां के लोग खाने पीने के शौकीन भी बहुत हैं। यहां कई देवी-देवताओं के मंदिर भी हैं जो 'सूरत' को और महत्वपूर्ण बनाते हैं। 'सूरत' से ३५ किलोमीटर दूरी पर स्थित है 'तेनगांव' जिसका उल्लेख आदिकाल में मिलता है। कहा जाता है की यहां समुद्र मंथन हुआ था और सतेश्वर महादेव जी का मंदिर जो सिद्धनाथ महादेव जी के नाम से प्रसिद्ध है, यहीं पर स्थापित है, यहीं पर ताप्ती नदी के किनारे दानवीर कर्ण का दाह संस्कार हुआ था। अंबाजी का मंदिर विशेष प्रसिद्ध है, यहां आने वाले हर किसी पर मां अंबाजी का आशीर्वाद बना रहता है ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अपने देश का नाम तो 'भारत' ही रहना चाहिए और यही हमारे देश की वास्तविक पहचान है। आनंद जी मूलतः उत्तर प्रदेश स्थित 'मुजफ्फरनगर' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा उत्तर प्रदेश में ही संपन्न हुई है। १९८३ से आप 'सूरत' में बसे हुए हैं और टेक्सटाइल उद्योग से जुड़े हैं, सूरत आडतिया कपड़ा असोसिएशन के अध्यक्ष, फेडरेशन टेक्सटाइल ट्रेडर्स असोसिएशन के कार्यकारणी सदस्य व अग्रसेन कम्प्यूटर सेंटर के ट्रस्टी के रूप में कार्यरत है। साथ ही अग्रवाल समाज के विभिन्न संस्थाओं में कार्यकारिणी सदस्य रहे हैं। जय भारत!

कैलाश अग्रवाल
अध्यक्ष सोमलाई बालाजी मंडल सूरत
सीकर निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३७४०७३२०८

कैलाश जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'सूरत' में जमीन आसमान का अंतर आ गया है। १९९२ में प्लेग की बीमारी के बाद यहां लोगों में जागृति आई। यहां की महानगरपालिका भी हमेशा अपने कर्तव्य के लिए सक्रिय रहती है, इसीलिए आज सूरत सबसे स्वच्छ शहर के रूप में भारत में दूसरे स्थान पर है। पहले यहां छोटी-छोटी सड़कें हुआ करती थी पर आज यह फ्लाईओवर सिटी के नाम से पूरे भारत में विख्यात है, क्योंकि सबसे अधिक फ्लाईओवर सूरत में ही है, इसीलिए यहां यातायात की सुविधा बहुत उत्तम हो गई है, ट्रैफिक जैसी कोई समस्या नहीं, इसीलिए लोग यहां आकर व्यापार करना पसंद करते हैं। देश के विभिन्न क्षेत्रों से व्यापारी यहां व्यापार के लिए आते हैं। सूरत के विकास में यहां के प्रवासियों का महत्वपूर्ण योगदान है। कपड़ा व डायमंड उद्योग के लिए 'सूरत' देश में ही नहीं विदेशों में भी जाना जाता है। तीसरे स्थान पर सबसे प्रमुख व्यापार जरी का है, जिसका निर्माण बड़े पैमाने पर होता है। पहले एक जमाने में यहां चांदी की ज़री बनती थी पर आज पॉलिस्टर फैब्रिक के जरी का निर्माण होता है। यहां टेक्सटाइल इंडस्ट्रीज में राजस्थानी, पंजाबी व हरियाणा के लोग अधिक है, इनमें भी सबसे अधिक राजस्थानी समाज के लोग टेक्सटाइल उद्योग से जुड़े हैं। डायमंड बाजार में गुजरातियों का दबदबा है विशेषकर मैन्युफैक्चरिंग में और फिनिशिंग में आज के युवा वर्ग विशेष रुप से जुड़े हैं। यहां का वातावरण धार्मिक व सामाजिक है, यहां के लोग किसी न किसी धार्मिक व सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहते हैं, इसे मिनी भारत भी कहा जाता है, क्योंकि यहां हर प्रदेश व हर क्षेत्र के लोग बसे हैं और सभी के बीच आपसी सामंजस्य बहुत ही उत्तम है। प्रवासियों को यहां घर जैसा माहौल देता है। यह समाज के सामाजिक भवन भी बने हुए हैं। पर्यटन की दृष्टि से देखा जाए तो यहां का ताप्ती नदी का किनारा बड़ा ही मनमोहक है, सूरत से कुछ किलोमीटर दूरी पर दरिया का किनारा लगता है, जहां लोग जाना पसंद करते हैं। कई हेरिटेज भवन, प्राणी संग्रहालय, मछली घर हैं। यहां की सिटी बस भी आकर्षण का केंद्र है। सूरत में देवी अंबाजी का मंदिर विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जो लोगों की आस्था का मुख्य केंद्र है, साथ ही यहां राजस्थानी समाज द्वारा मिलकर बनाया गया खाटू श्याम जी का मंदिर भारत में दूसरा सबसे बड़ा मंदिर है। यहां हनुमान जी के भी कई मंदिर है, ऐसी ही कई विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि यह बहुत ही अच्छी सोच है और यह होना भी चाहिए। इंडिया नाम तो अंग्रेजों द्वारा थोपा गया है, हम अपने भारतीय नाम को छोड़कर अपने देश को इंडिया नाम से क्यों बदनाम कर रहे हैं। विश्व में किसी भी देश के २ नाम नहीं हैं तो हमारे देश का २ नाम क्यों? नाम एक ही होता है और उसी से हमारी पहचान होती है, अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए।

कैलाश जी मूलतः राजस्थान स्थित सीकर जिले के 'डालमास' गांव के निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। १९८८ से आप 'सूरत' में बसे हुए हैं और टेक्सटाइल उद्योग से जुड़े हैं, साथ ही कई सामाजिक संस्थाओं में भी सक्रिय हैं। सोमलाई बालाजी मंडल में अध्यक्ष के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी के गौसंवर्धन सेल के प्रदेश कार्यकारिणी में भी सक्रिय हैं। जय भारत!

विद्याकर बंसल
व्यवसायी व समाजसेवी
भिवानी निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२४१५७००२

विद्याकर जी कर्मभूमि 'सूरत' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'सूरत' में जमीन-आसमान का अंतर आ गया है। पहले इसका क्षेत्रफल सीमित था, आज इसके क्षेत्रफल का विस्तार चहुं ओर हुआ है। यहां के प्रसिद्ध क्षेत्र में सिटीलाइट, वेसु, घोडदौड़ विशेष रूप से उल्लेखनीय है। सूरत का विकास चहुं दिशा में हुआ है, उसी तरह सूरत के लोग भी बहुत ही मृदुलभाषी हैं। यहां के प्रवासी और मूल निवासियों के बीच आपसी भाईचारा इतना है कि पता ही नहीं चलता की कौन किस क्षेत्र से है, सभी आपस में बहुत ही घुले-मिले हैं। जनसंख्या की दृष्टि से भी यहां बहुत तेजी से वृद्धि हुई है, इसीलिए आज यहां हर व्यापार उद्योग धंधे बहुत ही तेजी से बढ़ रहे हैं। लोगों का आपसी सामंजस्य बहुत ही उत्तम है। यहां का दुम्मस बीच विशेष रूप से उल्लेखनीय है, साथ ही कई देवी-देवताओं के मंदिर हैं। यह धार्मिक व सामाजिक क्षेत्र के रूप में भी जाना जाता है, क्योंकि यहां के लोग धर्म समाज से जुड़े विभिन्न क्रियाकलापों में बढ़-चढ़ कर सहभागी होते हैं। यहां हर संस्कृति का मेल आपको मिलेगा। हर पर्व बड़े हर्षोल्लास से मनाया जाता है, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश की पहचान तो 'भारत' से ही रहनी चाहिए, इंडिया नाम तो अंग्रेजों द्वारा थोपा गया है, अपनी संस्कृति 'भारत' से ही है और 'भारत' ही रहनी चाहिए, इसका अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार भी होना चाहिए।

विद्याकर जी मूलतः हरियाणा स्थित भिवानी के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा भिवानी में संपन्न हुई है। आप कई वर्षों तक दिल्ली और बिहार में भी बसे रहे, पिछले कुछ वर्षों से आप 'सूरत' में बसे हुए हैं। टेक्सटाइल उद्योग में डाइंग और प्रिंटिंग के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही आप सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। वनबंधु परिषद के पूर्व अध्यक्ष रहे हैं। वर्तमान में संरक्षक के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे हैं, साथ ही अग्रवाल प्रगति ट्रस्ट विद्या विहार जैसी कई सामाजिक संस्थाओं में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। जय भारत!

सुरेंद्र सोनी
आयकर सलाहकार
जोधपुर निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९८२५१२०८१०

सुरेंद्र जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले के मुकाबले आज 'सूरत' चार गुना परिवर्तित हो चुका है, पहले यह एक छोटा सा शहर हुआ करता था, अब यह पुरी तरह से विस्तृत हो चुका है, यहां सिंगल रोड हुआ करती थी पर आज यहां इतनी सड़कें बन चुकी है। आवागमन की सुविधाएं बहुत ही उत्तम हो गई है। सूरत को फ्लाईओवर सिटी के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि यहां १०० से भी अधिक फ्लाईओवर बने हुए हैं, इसीलिए यहां ट्रैफिक जैसी कोई समस्या नहीं होती। डायमंड और टेक्सटाइल इंडस्ट्रीज तो 'सूरत' में हमेशा से ही रहा है और आज बहुत अधिक बढ़ चुका है, साथ ही फूड इंडस्ट्रीज भी बड़ी तेजी से बढ़ रहे हैं क्योंकि यहां सभी समाज व प्रांत के लोग बसे हैं, इसीलिए यहां हर स्वाद का व्यंजन आपको आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। चूंकि यहां भारत के सभी क्षेत्र के लोग बसे है, इसके बावजूद यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही सौहार्दपूर्ण है। यहां हर उत्सव बड़े ही हर्षोल्लास से मनाया जाता है। यहां टेक्सटाइल व ट्रेडिंग इंडस्ट्रीज में राजस्थान, पंजाब, हरियाणा के लोग अधिक हैं, इन इंडस्ट्रीज में मजदूर ओडिशा, उत्तर प्रदेश, बिहार आदि से जुड़े हैं। डायमंड्स उद्योग में सौराष्ट्र के लोग अधिक सक्रिय हैं। पर्यटन की दृष्टि से देखा जाए तो 'सूरत' में तो विशेष कुछ नहीं, पर 'सूरत' के आसपास कई क्षेत्र में पर्यटन के लिए लोग जाते हैं। स्टैचू ऑफ यूनिटी यहां से मात्र कुछ किलोमीटर की दूरी पर ही स्थित है, 'सूरत' वासियों की आस्था का मुख्य केंद्र अंबाजी का मंदिर है जो काफी प्राचीन है। यहां हर समाज की अपनी-अपनी संस्थाएं व भवन बने हुए है, जिसमें माहेश्वरी समाज के लगभग २० से अधिक समितियां कार्यरत हैं, जिसमें दो विद्यालय जो कि हायर सेकेंडरी तक है व दो माहेश्वरी भवन बने हुए हैं ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' इंडिया नहीं, इस संदर्भ में अपना विचार रखते हुए कहते हैं कि इससे अच्छी बात और कोई नहीं हो सकती कि अपने देश की पहचान सिर्फ 'भारत' से ही रहे और यह आवश्यक भी है कि अपनी संस्कृति व सामाजिक मूल्यों को बचाने के लिए अपने देश की पहचान सिर्फ 'भारत' से ही बनी रहे।

सुरेंद्र जी मूलतः राजस्थान स्थित 'जोधपुर' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'जोधपुर' में ही संपन्न हुयी है। १९८५ से आप 'सूरत' में बसे हैं, सूरत में आप आयकर सलाहकार के रूप में कार्यरत हैं, साथ ही माहेश्वरी समाज की विभिन्न संस्थाओं से भी संलग्न हैं। जय भारत!

बृजमोहन सोमानी
व्यवसायी व समाजसेवी
राजगढ़ अजमेर निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९४२६७७२८९७

बृजमोहन जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' की विशेषताओं के संदर्भ में कहते हैं कि पहले के मुकाबले आज का 'सूरत' पूरी तरह से ही बदल चुका है। यहां के हर क्षेत्र में, हर चीजों में परिवर्तन आया है, लोगों की व्यवहारों में भी परिवर्तन आ गया है। पहले हर जगह इमानदारी नजर आती थी पर अब यह कम हो गई है। पहले यहां के बाजार सीमित हुआ करते थे, आज बाजारों की संख्या भी बढ़ गई है, यहां का रिंग रोड, सारोली, बॉम्बे मार्केट विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिनमें बॉम्बे मार्केट रिटेल के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। यह क्षेत्र टेक्सटाइल और डायमंड इंडस्ट्रीज के लिए विशेष रूप से विख्यात है, साथ ही ज़ारी का भी काम भी बहुत बड़े पैमाने पर होता है, जिसका निर्यात देश के विभिन्न भागों में किया जाता है। यहां गुजराती समाज के अलावा राजस्थानी, पंजाबी, उड़ीसा, यूपी, बिहार, मध्य प्रदेश आदि क्षेत्रों के लोग व्यापार व रोजगार के लिए बसे हैं, सभी के बीच आपसी सामंजस्य बहुत ही उत्तम है। यहां का सामाजिक माहौल अन्य शहरों की तुलना में बहुत ही उत्तम है यहां की संस्कृति की बात की जाए तो सभी लोग अपनी संस्कृति को संजोए हुए हैं। सभी अपने पर्वों को बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। खानपान की दृष्टि से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, इसीलिए यहां होटल व्यवसाय भी बहुत बढ़ गए हैं। पर्यटन स्थल की बात की जाए तो दुम्मस बीच विशेष रूप से उल्लेखनीय है। अंबाजी का मंदिर, स्वामीनारायण जी का मंदिर, राधा कृष्णा जी का मंदिर प्रसिद्ध है। यहां हर समाज की अपनी सामाजिक संस्थाएं हैं, माहेश्वरी समाज की संख्या यहां लगभग सात हजार के करीब है जिनके द्वारा यहां दो माहेश्वरी भवन व विद्यालय बनाए गए हैं, साथ ही माहेश्वरी समाज की कई संस्थाएं कार्यरत हैं, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि इससे अच्छी और कोई बात हो ही नहीं सकती की अपने देश की पहचान एक ही नाम से रहे 'भारत'।

बृजमोहन जी मूलतः राजस्थान स्थित अजमेर जिले के पास 'राजगढ़' के निवासी हैं। आपका जन्म व शिक्षा 'राजगढ़' में ही संपन्न हुई है। पिछले ४० वर्षों से आप 'सूरत' में बसे हैं और कपड़े व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही आप माहेश्वरी समाज के विभिन्न संस्थाओं में भी सक्रिय हैं। जय भारत!

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाना चाहिए

हिंदी को जन साधारण की भाषा बनाना है, विदेशी भाषा से हनन को बचाना है-बिजय कुमार जैन

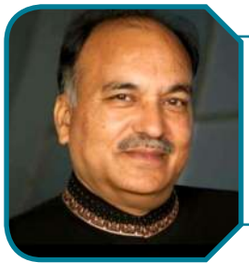

अनिल अग्रवाल

व्यवसायी व समाजसेवी

दिल्ली निवासी-सूरत प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९८२५११२१६६

अनिल जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' की विशेषताओं के संदर्भ में कहते हैं कि पहले और आज के 'सूरत' में कई परिवर्तन आए हैं और यही परिवर्तन 'सूरत' को नई ऊंचाइयों पर ले जा रहे हैं। यह सबसे तेजी से प्रगति करने वाला शहर बन चुका है। यहां के लोग नई-नई तकनीक को अपनाने में विश्वास करते हैं, इसीलिए समय-समय पर टेक्सटाइल उद्योग में नए-नए मशीनरी लग रहे हैं। यहां से निर्मित कपड़े देश ही नहीं विदेशों में भी निर्यात किए जाते हैं। यहां डायमंड उद्योग का भी वर्चस्व बढ़ा है, जिनमें गुजराती समाज के लोग सबसे अधिक सक्रिय हैं। भारत के सभी क्षेत्र व राज्यों से लोग यहां बसे हुए हैं। यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही सौहार्दपूर्ण है, लोग एक दूसरे के साथ मिलकर रहते हैं और एक-दूसरे के सहयोग के लिए तत्पर रहते हैं। यहां की संस्कृति भी बहुत ही उत्तम है, हर धर्म और समाज के लोग अपने त्योहारों को बड़े हर्षोल्लास से मनाते हैं, जिसमें अन्य समाज के लोग भी सहभागी होते हैं। खान-पान के बारे में तो 'सूरत' विशेष महत्व रखता है, यहां के लोग खाने-पीने के बड़े शौकीन हैं। घूमने-फिरने की बात की जाए तो यहां का दुम्मस बीच विशेष महत्व रखता है। यहां इंफ्रास्ट्रक्चर भी बहुत तेजी से बढ़ा है। यहां कई फ्लाईओवर बने हैं, इसीलिए सूरत को 'फ्लाईओवर सिटी' के नाम से भी जाना जाता है, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश की पहचान तो 'भारत' से ही रहनी चाहिए। यही हमारे देश का वास्तविक नाम है।

अनिल जी मूलतः दिल्ली के निवासी हैं और पिछले ३५ वर्षों से 'सूरत' में बसे हुए हैं। यहां आप टेक्सटाइल उद्योग से जुड़े हैं, आप सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। अग्रवाल समाज के विभिन्न संस्थाओं में सदस्य के रूप में कार्यरत हैं। जय भारत!

भरत भूतड़ा

व्यवसायी व समाजसेवी

बाड़मेर निवासी-सूरत प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९८२५११९९९१

भरत जी अपने कर्मभूमि 'सूरत' की प्रसिद्धि का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि मैंने पूरे भारत के प्रसिद्ध शहरों का भ्रमण किया है पर 'सूरत' जैसा शहर अन्यत्र कहीं नहीं है, यहां सुकून, शांत और अपनत्व की भावना है वह भारत के किसी शहर में नहीं दिखाई देता। यहां के लोगों का धार्मिक और सामाजिक व्यवहार बहुत ही उत्तम है। यहां के लोग बड़े ही विश्वासु व भोले हैं, एक छोटे से कागज के टुकड़े पर करोड़ों का व्यापार कर लेते हैं। हमारा समाज माहेश्वरी समाज कहलाता है। हमारे समाज के यहां लगभग ३००० परिवार हैं, जिनमें ९५% लोग टेक्सटाइल उद्योग से जुड़े हैं। सूरत में हर प्रांत के लोग व समाज के लोग बसे हैं, सभी के बीच आपसी सामंजस्य बहुत ही उत्तम है, एक दूसरे के सहयोग के लिए सदैव अग्रसर रहते हैं। यहां का खानपान बहुत ही उत्तम है, यहां के लोग खाने-पीने के शौकीन हैं। हमारे यहां एक कहावत है 'काशीनो मरण सूरत नो जमण'। यहां का वातावरण भी बहुत सुंदर है। ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' में...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश की पहचान तो एक से ही होनी चाहिए 'भारत' से, इसका प्रचार-प्रसार अधिक होना चाहिए, तभी लोगों में इसके प्रति जागृति आएगी।

भरत जी मूलतः राजस्थान स्थित 'बाड़मेर' के निवासी हैं। आपका जन्म जोधपुर में व संपूर्ण शिक्षा 'बाड़मेर' में संपन्न हुई है। आजादी के पूर्व आपका परिवार पाकिस्तान का निवासी था। आजादी के पश्चात आपका परिवार 'बाड़मेर' आकर बस गया, कुछ वर्षों तक आप बाड़मेर में मिलिट्री सप्लाई व्यवसाय से जुड़े रहे, तत्पश्चात १९७६ में 'सूरत' आकर बसे और यहां बिल्डर के रूप में अपनी पहचान बनाई। पिछले १० वर्षों से आप पूर्णतः समाज सेवा से जुड़े हैं। सूरत माहेश्वरी बांधकाम समिति के सदस्य रहे हैं, अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हुए है। जय भारत!

कैलाश बिरला

व्यवसायी व समाजसेवी

फलौदी निवासी-सूरत प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ८९८०२४८११३

कैलाश जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' की विशेषताओं के संदर्भ में कहते हैं कि पहले के मुकाबले आज का सूरत सौ गुना बढ़ गया है, आज यह सबसे स्वच्छ सुंदर शहर के रूप में जाना जाता है। यहां का कपड़ा व डायमंड मार्केट विशेष रूप से उल्लेखनीय है, विशेषकर कपड़ा उद्योग में कुर्तियों के निर्माण बड़े पैमाने पर होता है, जिसका निर्यात देश-विदेश में भी किया जाता है। यहां लूम्स के कारखाने भी सबसे अधिक हैं, उद्योग व्यापार जिस तरह बढ़े हैं, उसी तरह यहां के लोगों का जीवन स्तर भी बदल गया है। यहां सभी राज्यों के लोग उद्योग व्यापार व रोजगार नियमित बसे हुए हैं, सभी के बीच आपसी सामंजस्य बहुत ही उत्तम है, यहां हर धर्म और समाज की संस्कृति देखने को मिलती है। सभी पर्व बड़े हर्षोल्लास से मनाया जाता है। सूरत में शुद्ध शाकाहारी भोजन करने वालों की संख्या सबसे अधिक है, सुरती खाना हर किसी को पसंद आता है, इसीलिए सूरत में आज होटल **शेष पृष्ठ ३३ पर...**

पृष्ठ ३२ से ... व्यवसाय भी सबसे अधिक बढ़ गए हैं। यहां के प्रसिद्ध स्थलों में दुम्मस व उबराठ बीच विशेष रूप से उल्लेखनीय है, साथ ही यहां कई मंदिर व गार्डन है जो सूरत को और खूबसूरत बनाते हैं, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि यह तो होना ही चाहिए कि अपने देश की पहचान एक ही नाम से रहे 'भारत', हमारे देश का प्राचीन और ऐतिहासिक नाम 'भारत' ही है इसीलिए यही नाम हमारी पहचान रहनी चाहिए।

कैलाश जी मूलत: राजस्थान स्थित जोधपुर के 'फलोदी' के निवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा 'फलौदी' में ही संपन्न हुई है। पिछले २५ वर्षों से आप 'सूरत' में बसे हैं और कपड़ा व्यापार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। माहेश्वरी समाज सिटी लाईट के सदस्य के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। जय भारत!

बीना अग्रवाल
अध्यक्ष भिक्षम सूरत
भिवानी निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९९७४७०७८५९

बीना जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहती हैं कि 'सूरत' के बारे में जितना कहा जाए उतना कम है, यहां की हर बातों में विशेषताएं हैं। मुंबई से ज्यादा मुझे 'सूरत' भा गया है, इसीलिए यहां से छोड़कर अन्य कहीं नहीं जाना है। पिछले ३४ सालों में सूरत ० से १०० प्रतिशत तक उन्नति कर चुका है। पहले यहां कुछ भी नहीं था, लोगों का जीवन स्तर भी निम्न था, गंदगी का वास रहता था, पर आज सूरत सबसे स्वच्छ शहर के रूप में पूरे भारत में जाना जाता है। दिन प्रतिदिन यहां की प्रगति होती जा रही है। लोगों के रहन-सहन का स्तर ऊंचा उठता जा रहा है और आज यह सबसे तेजी से प्रगति करने वाला शहर बन गया है। सूरत एक खूबसूरत शहर है साथ ही यहां के लोग भी कर्म व मन से सुंदर हैं। किसी से किसी का कोई भेदभाव नहीं, मनमुटाव नहीं, हर समाज व धर्म के लोग आपसी प्रेम व्यवहार के साथ निवास करते हैं। सामाजिक और धार्मिक दृष्टिकोण से भी यह बहुत ही उत्तम क्षेत्र है। यहां कई देवी-देवताओं के मंदिर हैं, विशेषकर अंबाजी का मंदिर विशेष रूप से उल्लेखनीय है, साथ ही श्याम बाबा जी का मंदिर भी प्रसिद्ध है जो लोगों की श्रद्धा का मुख्य केंद्र है ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की..

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, इससे उत्तम नाम और हो ही नहीं सकता और यह नाम प्राचीन काल से चला आ रहा है, यही नाम हमारी पहचान से जुड़ा हुआ है।

बीना जी मूलतः राजस्थान स्थित 'चुरू' की निवासी हैं, जो आपका पीहर पक्ष है। आपका जन्म बर्मा में व संपूर्ण शिक्षा मुंबई में संपन्न हुई है। पिछले ३४ वर्षों से विवाह पश्चात सूरत में बसी हुई है, आप का ससुराल पक्ष हरियाणा के भिवानी का निवासी है। आपके पति स्व. अनिल जी सूरत अग्रवाल समाज के एक प्रतिष्ठित उद्योगपति व समाजसेवी के रूप में जाने जाते थे, जिनका यहां सूरत में कपड़ों का व्यवसाय था जो आज आपके दोनों पुत्र संभाल रहे हैं। आप कई सामाजिक संस्थाओं में सक्रिय हैं। अग्रसेन भवन व अग्रवाल समाज की आजीवन सदस्या हैं। जय भारत!

प्रदीप जाखोटिया
व्यवसायी व समाजसेवी
रेणवाल निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३७७५५४७३२

प्रदीप जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'सूरत' में सब कुछ बदल गया है, हर क्षेत्र में परिवर्तन आया है। आज हमारा 'सूरत' स्वच्छता की दृष्टि में भारत का दूसरे नंबर का प्रमुख शहर बन चुका है, इसके अलावा यहां टेक्सटाइल और डायमंड इंडस्ट्रीज का भी बहुत तेजी से विकास हुआ है, इससे संबंधित सारे उद्योग व्यापार भी बढ़े हैं, साथ ही यहां ज़री का भी उद्योग बड़े पैमाने पर होता है जिसका निर्यात देश के विभिन्न भागों में होता है। यहां टेक्सटाइल उद्योग में अधिकतर राजस्थान, पंजाब, हरियाणा के लोग हैं साथ ही यू.पी. बिहार, उड़ीसा के लोग भी रोजगार के लिए बड़े पैमाने पर बसे हुए हैं। डायमंड क्षेत्र में गुजरातियों का वर्चस्व सबसे अधिक है, सभी क्षेत्र के लोग बसे होने के बावजूद यहां का सामाजिक व धार्मिक वातावरण बहुत ही उत्तम है। यहां के लोग सामाजिक कार्यों में भी बढ़-चढ़कर सहभागी होते हैं, यहां खाटू श्याम जी का भव्य मंदिर बना हुआ है, हर ग्यारस को निशान यात्रा निकाली जाती है। माता जी का जागरण किया जाता है। सूरत जैसा खान-पान शायद ही भारत में कहीं मिलता हो, यहां हर प्रकार के भोजन आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। यहां के प्रसिद्ध स्थलों में दुम्मस बीच विशेष रूप से उल्लेखनीय है ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश की पहचान तो 'भारत' से ही रहनी चाहिए और इसके लिए हमें अपनी राजभाषा (राष्ट्रभाषा) 'हिंदी' को बढ़ावा देना चाहिए और इसी पहल के रूप में मध्य प्रदेश में पहला हिंदी विश्वविद्यालय स्थापित हुआ था, यह एक अच्छी मुहिम है अपनी संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए।

प्रदीप जी मूलतः राजस्थान स्थित किशनगढ़ के 'रेणवाल' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। पिछले कई वर्षों से आप 'सूरत' में बसे हुए हैं और टेक्सटाइल उद्योग से जुड़े हैं, साथ ही माहेश्वरी समाज की कई संस्था में सक्रिय सदस्य के रूप में अपनी भागीदारी निभा रहे है। जय भारत!

हमारे देश की पहचान है हिंदी और हमारा अभिमान है हिंदी-बिजय कुमार जैन

विनोद कानोडिया
सचिव खाटू श्याम मंदिर सूरत
सूरजगढ़ निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२५१३९६२५

विनोद जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के सूरत का बहुत कुछ परिवर्तित हो चुका है। पहले सूरत एक छोटा शहर हुआ करता था, आज इसका विस्तार ८ से १० गुना बढ़ गया है। यहां की जनसंख्या भी पहले की तुलना में बहुत अधिक बढ़ गई है। रियल स्टेट, टेक्सटाईल मार्केट और डायमंड मार्केट में बहुत तेजी से वृद्धि हुई है। पहले यहां मल्टी स्टोरेज बिल्डिंग नहीं थी, आज हजार से अधिक मल्टी स्टोरेज बिल्डिंग व कॉम्प्लेक्स बन चुके हैं। रिंग रोड में गिने-चुने मार्केट ही हुआ करते थे, आज ५०० से भी अधिक मार्केट हैं। यहां रोजगार व व्यापार के लिए आने वाले हर प्रवासियों ने अपनी कर्मभूमि को प्रधानता दी है। अपने व्यवसाय के साथ-साथ कर्मभूमि के विकास के लिए भी अपनी अहम भूमिका निभाई है। यहां हर धर्म समाज के लोग बसे हैं और सभी के भवन, स्कूल, हॉस्पिटल व सामाजिक संस्थाएं भी कार्यरत हैं। अग्रवाल, माहेश्वरी, जैन, ब्राह्मण, जाट सभी की सामाजिक संस्थाएं कार्यरत हैं। अग्रवाल समाज के २ विद्यालय हैं, ३ भवन, एक हॉस्पिटल है और एक हॉस्पिटल बनने जा रहा है जो आने वाले दो-तीन सालों में पूरी तरह से बन जाएगा। यहां सभी धर्म समाज के लोग बसे होने के कारण इसे मिनी भारत भी कहा जाता है, यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही उत्तम है। हमेशा ही शांतिपूर्ण व सौहार्दपूर्ण वातावरण बना रहता है। सभी एक दूसरे के व्यापारिक व सामाजिक सहयोग के लिए तत्पर रहते हैं। यहां कई प्रमुख मंदिर देवस्थान है जो लोगों की श्रद्धा का मुख्य केंद्र है जहां लोग जाना पसंद करते हैं। साथ ही मनोरंजन के लिए भी यहां कई साधन हैं। यहां के लोग खाने-पीने के ज्यादा शौकीन है, इसीलिए यहां हर प्रकार के भोजन मिलते हैं ऐसे ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश की पहचान तो 'भारत' नाम से ही होनी चाहिए, क्योंकि 'भारत' नाम में हमारे देश का गौरवशाली इतिहास है।

विनोद जी मूलतः राजस्थान स्थित झुंझुनू जिले के 'सूरजगढ़' के निवासी हैं, आपका जन्म व प्रारंभिक शिक्षा सूरजगढ़ में, तत्पश्चात उच्च शिक्षा पिलानी में सम्पन्न हुई है। पिछले ४२ वर्षों से 'सूरत' में बसे हुए हैं। यहां आप टेक्सटाइल उद्योग से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। अग्रवाल समाज के विभिन्न संस्थाओं में कार्यकारिणी सदस्य के रूप में और खाटू श्याम जी मंदिर सूरत के सचिव के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। जय भारत!

राम अवतार झंवर
सचिव सूरज जिला माहेश्वरी सभा
नागौर निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२४१६४१०७

रामअवतार जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'सूरत' की पहचान टेक्सटाइल नगरी के रूप में है, यहां से निर्मित कपड़े देश ही नहीं विदेशों में भी निर्यात किए जाते हैं। देश भर से व्यापारी कपड़ों के आयात-निर्यात के लिए 'सूरत' आते हैं। दूसरा यह डायमंड सिटी है यहां डायमंड का बहुत बड़ा कारोबार होता है। 'सूरत' अपने आप में ही 'मिनी भारत' कहा जाता है क्योंकि यहां हर प्रदेश के छोटे-छोटे गांव के लोग भी यहां निवास कर रहे हैं, भारत के उत्तर से दक्षिण व पूरब से पश्चिम के लोग यहां बसे हुए हैं। 'सूरत' में सभी तरह का विकास हुआ है। यहां हर व्यक्ति को अपने हुनर और काबिलियत के बल पर रोजगार अवश्य मिलता है, बस उसके अंदर मेहनत व कुछ कर गुजरने की लगन होनी चाहिए। यहां सभी धर्म और समाज के लोग बसे होने के बावजूद यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही सौम्य व सौहार्दपूर्ण है, लोग एक दूसरे से मेल मिलाप और प्रेम भाव रखते हैं। सभी अपनी-अपनी संस्कृति व त्योहारों को बड़े हर्षोल्लास से मनाते हैं साथ ही हर धर्म और समाज का सहयोग रहता है। 'महेश नवमी' के अवसर पर सिटी लाईट व पर्वत पाटिया में शोभायात्रा निकाली जाती है, जिसमें ४ से ५ हजार की संख्या में लोगों की उपस्थित रहती है। यहां माहेश्वरी समाज के लगभग ८५०० परिवार बसे हुए है, जिनके द्वारा २ माहेश्वरी भवन, दो विद्यालय बनाए गए हैं, साथ ही अन्य कई संस्थाएं भी कार्यरत हैं। पर्यटन की बात की जाए तो यहां का दुम्मस और उबराठ बीच विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जहां लोग जाना पसंद करते हैं, साथ ही फ्लावर गार्डन, प्राणी संग्रहालय, मछली घर जैसे कई प्रमुख संस्थान हैं, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि बिल्कुल अपने देश का नाम तो 'भारत' ही रहाना चाहिए, इंडिया तो अंग्रेजों द्वारा थोपा गया नाम है। अंग्रेज चले गए तो हम उनके दिए हुए नाम INDIA को क्यों अपनाये हमारे देश का नाम तो 'भारत' है और 'भारत' ही रहना चाहिए।

रामअवतार जी मूलतः राजस्थान स्थित नागौर जिले के पास 'रियाबड़ी' के निवासी हैं, पिछले ३० वर्षों से 'सूरत' में बसे हुए हैं। यहां आप कपड़ा ब्रोकरेज के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। माहेश्वरी समाज की विभिन्न संस्थाओं से जुड़े हैं, सूरत जिला माहेश्वरी सभा के सचिव के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। जय भारत!

हर भारतीयों का है आव्हान
भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए

मनोहरलाल तोषनीवाल
व्यवसायी व समाजसेवी
मारोठ निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३७४७१६७४०

मनोहर जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' के विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'सूरत' में रात-दिन का अंतर आ चुका है। आज के 'सूरत' को कोई पहचान ही नहीं सकता कि क्या यह पहले वाला ही 'सूरत' है। पहले यहां सड़कें नहीं थी, ना सफाई थी, पर आज यह फ्लाईओवरों का शहर कहा जाता है। सफाई की दृष्टि में यह 'भारत' के दूसरे सबसे स्वच्छ शहर में जाना जाता है। आज यहां मल्टीनेशनल बिल्डिंग बन चुकी हैं। मेडिकल व अन्य मूलभूत सुविधाएं यहां के महानगरपालिका द्वारा व्यवस्थित रूप से उपलब्ध कराई जाती है, यहां की महानगरपालिका 'सूरत' के विकास में विशेष भूमिका निभाती है। यहां उद्योग व व्यवसाय क्षेत्र में राजस्थान, पंजाब, हरियाणा के लोग विशेष रूप से कार्यरत हैं। शिक्षा की दृष्टिकोण से भी 'सूरत' विशेष स्थान रखता है। यहां कई स्कूल, कॉलेज व शैक्षणिक संस्थान बने हुए हैं। प्रगति की दृष्टि से 'सूरत' आज सबसे तेज शहर के रूप में जाना जाता है। यहां रह रहे धर्म-समाज के लोग हर पर्व बड़े हर्षोल्लास से मानते हैं। यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही शांतिप्रिय है। घूमने-फिरने के लिए भी 'सूरत' बहुत ही उत्तम स्थान है। यहां माहेश्वरी समाज की कई संस्थाएं कार्यरत हैं, विभिन्न समाज की भी संस्थाएं सामाजिक व धार्मिक क्षेत्र में अग्रसर हैं। ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है की इससे अच्छी बात और कोई हो ही नहीं सकती की अपने देश की पहचान सिर्फ 'भारत' नाम से ही रहे।

मनोहर जी मूलतः राजस्थान स्थित नागौर जिले के 'मारोठ' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा कोलकाता में संपन्न हुई है। पिछले कई वर्षों से आप सूरत में बसे हुए हैं और गारमेंट व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही माहेश्वरी समाज की कई संस्थाओं में सक्रिय सदस्य के रूप में अपनी भूमिका निभाते हैं। जय भारत!

अनिल कुमार जैन
व्यवसायी व समाजसेवी
जलगांव निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२५४७७२२१

अनिल जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'सूरत' को सबसे तेजी से प्रगति करने वाला शहर कहा जाता है, इसे सबसे समृद्ध शहर कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी, यहां की सरकार भी सूरत के विकास का विशेष ध्यान रखती है और यहां के लोग अपने दायित्वों का भी निर्वाह करने से पीछे नहीं हटते, चाहे वह टैक्स हो या कोई अन्य कार्य। सूरत सिल्क और डायमंड सिटी के नाम से जाना जाता है और आज इससे ही जुड़े लघु उद्योग बड़े पैमाने पर स्थापित हो रहे हैं। नई-नई मशीनरी का उपयोग किया जाने लगा है। यहां की प्राचीन पहचान ज़रीवर्क है जो सुरती लोगों का मुख्य काम हुआ करता था, जो यहां के घर-घर में चलता है, जिसमें से मात्र १० से १५ प्रतिशत ज़रिवर्क उद्योग शेष है। डायमंड के क्षेत्र में यहां के मूल काठियावाड़ी पटेल का विशेष प्रभुत्व है व टेक्सटाइल क्षेत्र में दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब के लोगों का प्रभुत्व है। यहां सभी धर्म समाज के लोग बसे हुए हैं इसके बावजूद यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही सुंदर है। यहां के लोग खान-पान के शौकीन हैं। १ किलोमीटर के दायरे के अंदर ही सस्ता व अच्छा भोजन व नाश्ता आपको आसानी से मिल जाएगा। यहां के लोगों को खाने का बहुत क्रेज़ है यहां सभी अपनी संस्कृति व संस्कारों को संजोय हुए हैं। गरबा, नवरात्रि, गणेश चतुर्थी, शिव जयंती, होली-दिवाली चाहे कोई भी त्योहार हों सभी बड़े हर्षोल्लास से मनाए जाते हैं। ऐसी ही अनेक विशेषताएं है हमारे सूरत की...

अनिल जी मूलतः महाराष्ट्र के जलगांव जिले में स्थित जामनेर के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। पिछले ३५ वर्षों से आप सूरत में बसे हैं और टेक्सटाइल कंपनी के डिजाइनर सेक्शन के हेड ऑफ़ डिपार्टमेंट है, साथ ही आप कई सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि यकीनन अपने देश का नाम 'भारत' से ही रहना चाहिए। इंडिया तो अंग्रेजों द्वारा थोपा गया नाम है और यही हमारे देश की वास्तविक पहचान है। जय भारत!

सुनील जैन
व्यवसायी व समाजसेवी
दिल्ली निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३७४७२२६०९

सुनील जी अपने कर्मभूमि 'सूरत' की विशेषताओं का उल्लेख कहते हुए कहते हैं कि आज हमारा 'सूरत' देश ही नहीं विदेशों में भी पहचाना जा रहा है, इसकी यह पहचान टेक्सटाइल और डायमंड इंडस्ट्रीज के कारण है, साथ ही सूरत का इन्फ्रास्ट्रक्चर भी बहुत तेजी से प्रगति कर रहा है। पहले यहां की सड़कें छोटी हुआ करती थीं, छोटे-छोटे संकुचित क्षेत्र थे पर आज सड़कें चौड़ी, मॉल, मल्टी स्टोरेज बिल्डिंग्स बन गए हैं। रियल एस्टेट का कारोबार भी बहुत तेजी से बढ़ा है। यहां डायमंड क्षेत्र में काठियावाड़ी गुजराती लोगों का वर्चस्व अधिक है। शिक्षा व अन्य सुविधाओं की बात की जाए तो बहुत ही उत्तम है, यहां प्रवासियों द्वारा भी कई शैक्षणिक संस्था बनाई गई है, चिकित्सा के क्षेत्र में भी बहुत उत्तम शेष पृष्ठ ३६ पर...

कोई भी राजनीतिक कारण कितने ही प्रबल क्यों न हों, 'हिन्दी' भाषा के इस उत्थान में आड़े आने नहीं देना चाहिए - बिजय कुमार जैन

पृष्ठ ३५ से ... विकास हुआ है। यहां हर समाज व संस्कृति के लोग बसे हैं सभी द्वारा अपने पर्व बड़े उत्साह पूर्वक व मिलजुल कर मनाए जाते हैं। यहां का खान-पान भी बहुत ही प्रसिद्ध है। ऐसी अनेक विशेषताएं और भी हैं हमारे 'सूरत' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि बिल्कुल अपने देश का नाम तो एक ही रहना चाहिए चाहे भाषा कोई भी हो और वह है 'भारत'।

सुनील जी मूलतः राजस्थान के निवासी है। आपका परिवार कई वर्षों से दिल्ली में बसा हुआ है। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा दिल्ली में ही संपन्न हुई है। पिछले १५-२० सालों से आप सूरत में बसे हुए हैं और कपड़ों के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सूरत स्थित दिगम्बर समाज की संस्थाओं से भी जुड़े हैं। जय भारत!

विनोद बजाज
व्यवसायी व समाजसेवी
सीकर निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३७७०४०८०७

विनोद जी अपने कर्मभूमि 'सूरत' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि हमारा 'सूरत' हर दृष्टिकोण से उत्तम है चाहे वह आर्थिक हो या सामाजिक या हो राजनीतिक, सभी क्षेत्र में 'सूरत' ने अपनी विशेष छाप छोड़ी है। यहां के लोगों के बीच व्यावसायिक व सामाजिक वातावरण बहुत ही उत्तम है। यहां के डायमंड इंडस्ट्रीज में गुजराती समुदाय का वर्चस्व अधिक है, टेक्सटाइल क्षेत्र में राजस्थानी समाज ने अपनी विशेष पहचान बनाई है। यहां के लोग एक दूसरे पर पूर्ण विश्वास करते हैं, साथ ही यहां के विकास में प्रवासियों ने भी अपना विशेष योगदान दिया है, यहां प्रवासियों द्वारा बड़े-बड़े स्कूल, शिक्षण संस्थान, अस्पताल, सामाजिक भवन, धार्मिक संस्थाएं बनाई गई हैं। यहां की प्रमुख देवी अंबाजी का मंदिर विशेष उल्लेखनीय जो श्रद्धा का प्रमुख केंद्र है साथ ही सूरतवासी खाटू श्याम जी के परम भक्त हैं इसीलिए हर रविवार को यहां हर समाज के लोग कीर्तन का आयोजन करते हैं, जिसमें भारी संख्या में लोगों की उपस्थिती रहती हैं। यहां के लोग बड़े ही धार्मिक प्रवृत्ति के हैं, पर्यटन की बात की जाए तो धीरे-धीरे यहां पर्यटन का भी विकास हो रहा है, यहां के प्रमुख पर्यटन स्थल में 'दुम्मस' बीच विशेष रूप से उल्लेखनीय है, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' इस संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि अवश्य ही अपने देश की पहचान तो एक नाम से 'भारत' से ही रहनी चाहिए क्योंकि यही हमारे देश का ऐतिहासिक नाम है जो सदियों से चला आ रहा है तो हम अपनी पहचान क्यों बदले, हमारी पहचान 'भारत' है और 'भारत' से ही रहनी चाहिए।

विनोद जी मूलतः राजस्थान स्थित 'सीकर' जिले के निवासी हैं, आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। पिछले २०-२२ वर्षों से आप सूरत में बसे हैं और टेक्सटाइल उद्योग से जुड़े हैं, साथ ही सूरत अग्रवाल समाज की विभिन्न संस्थाओं में ट्रस्टी के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। जय भारत!

बंसीलाल देवपुरा
व्यवसायी व समाजसेवी
भीलवाड़ा निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९०१६५११०९०

बंसीलाल जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' के विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले के मुकाबले आज का 'सूरत' बदल चुका है, यहां का विकास १०० गुना हुआ है, पहले 'सूरत' सीमित क्षेत्र तक ही फैला हुआ था पर आज इसका विस्तार सभी दिशाओं में हुआ है, पहले यहां की जनसंख्या मात्र ३ लाख के करीब थी, आज इसकी आबादी ५५ लाख से भी अधिक हो गई है। टेक्सटाइल उद्योग तो पहले से ही था, गली-कुचों में मार्केट लगता था, आज यहां कई बड़े-बड़े मॉल बन चुके हैं। सूरत का सबसे पहला 'सूरत टेक्सटाइल मार्केट' १९७० में स्थापित हुआ था, धीरे-धीरे यहां मार्केट बढ़ गया और आज यहां १०० से भी अधिक मार्केट है। डायमंड उद्योग भी बड़े पैमाने पर विकसित हुआ है, आज यहां हीरा व्यापारी के बड़े-बड़े ऑफिसेज बन चुके हैं। यहां डायमंड बुर्स का भी निर्माण किए जाते हैं, सूरत में ब्रास के नल का निर्माण होता है। जो उच्च कोटि के होते हैं, जिसका निर्यात देश के विभिन्न भागों में किया जाता है। सूरत के हाजिरा क्षेत्र में कई भारी उद्योगों के प्लांट लगे है जिनमें ओएनजीसी, इंडियन ऑयल, रिलायंस इंडस्ट्रिज, कृभको, एनटीपीसी, एस्सार स्टील, लार्सन एंड टूग्रो प्रमुख है। यहां व्यापार-उद्योग व रोजगार हेतु राजस्थान, बिहार, उत्तर प्रदेश, ओडिशा के लोग बसे हुए हैं, सभी राज्यों के लोग बसे होने के बावजूद यहां का वातावरण बहुत ही शांतिपूर्ण व मेल-मिलाप वाला है, लोग एक दूसरे के सहयोग के लिए तत्पर रहते हैं, यहां की संस्कृति और खानपान भी निराला है। पर्यटन की बात की जाए तो यहां का दुम्मस बीच, सुवाली बीच, उबराठ दरिया का किनारा विशेष रूप से प्रसिद्ध है। यहां के प्रसिद्ध मंदिरों में सिद्धनाथ भगवान (शिव का मंदिर), चार रास्ता पर स्थित दादा भगवान जी का मंदिर विशेष रूप से उल्लेखनीय है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए यह भूमि भरत की है, अतः इसकी पहचान सिर्फ भारत नाम से ही होनी चाहिए।

बंसीलाल जी मूलतः राजस्थान स्थित भीलवाड़ा के पास 'गोरख्या' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यही संपन्न हुई है। १९६६ से आप 'सूरत' में बसे हुए हैं, किराना होलसेल के व्यवसाय से जुड़े हैं। आपके पुत्र अपने अपने कार्य क्षेत्र में सक्रिय हैं, माहेश्वरी समाज से जुड़े हुए हैं। जय भारत!

देश की शान, हिंदी है महान-बिजय कुमार जैन

कन्हैया लाल कल
उपाध्यक्ष मंगोब सानिया माहेश्वरी सभा सूरत
चित्तौड़गढ़ निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९८२५८९६९५५

कन्हैयालाल जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' की विशेषताओं के बारे में कहते हैं कि पिछले कुछ सालों में 'सूरत' बहुत ही परिवर्तित हो चुका है। आज हमारा 'सूरत' सबसे साफ-सुथरा स्वच्छ शहर के रूप में जाना जाता है और यह प्लेग की महामारी के बाद ही संभव हुआ है, जिससे लोगों में जागृति आई है, तब से हमारा 'सूरत' एक स्वच्छ शहर के रूप में परिवर्तित होने लगा है 'सूरत' आज भारत के प्रमुख शहरों में से एक है, यहां कपड़ा व डायमंड उद्योग बड़े पैमाने पर होता है और इन्हीं से जुड़े अन्य कारोबार भी यहां प्रगति पर है। राजस्थान समाज के लोगों की यहां कपड़ों की दुकान है तथा कपड़ा फैक्ट्री में सौराष्ट्र वासियों के लोग सबसे अधिक हैं, इन फैक्ट्रियों में काम करने वाले उत्तर प्रदेश, बिहार, उड़ीसा के लोग अधिक सक्रिय हैं। डायमंड क्षेत्र में सौराष्ट्र के लोगों का वर्चस्व अधिक है। भारत के सभी क्षेत्रों के लोग यहां बसे हैं, यहां मिली-जुली संस्कृति का बोलबाला है, सभी अपने पर्व बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं, चाहे वह किसी भी धर्म समाज का हो, सभी के बीच आपसी भाईचारा बहुत ही उत्तम है। यहां के लोग धार्मिक कार्यों के साथ-साथ सामाजिक कार्यों को भी महत्व प्रदान करते हैं, इसीलिए यहां कई सामाजिक संस्थाएं, समाज सेवा हेतु सक्रिय हैं। खानपान की तो बात ही यहां की निराली है। माहेश्वरी समाज की यहां कई संस्थाएं कार्यरत है जिनमें दो सभा भवन, दो विद्यालय सक्रिय हैं ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहाना चाहिए, यही हमारे देश का ऐतिहासिक नाम है।

कन्हैयालाल जी मूलतः राजस्थान स्थित 'चित्तौड़गढ़' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'चित्तौड़गढ़' में ही संपन्न हुई है। लगभग ३० सालों से आप 'सूरत' में बसे हुए हैं और मोटर बैटरी और इन्वेटर व्यवसाय में सक्रिय हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी बढ़-चढ़कर शामील होते हैं। मंगोब सानिया माहेश्वरी सभा सूरत के उपाध्यक्ष के रूप में सक्रिय हैं। वर्तमान में मेवाड माहेश्वरी समाज के सह संगठन मंत्री के रूप में कार्यरत हैं। माहेश्वरी सत्संग समिति से भी जुड़े हैं। जय भारत!

राजीव जैन
अध्यक्ष श्री दिगम्बर जैन खण्डेलवाल समाज, सूरत
हाथरस निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९३७४७२१६१९

राजीव जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'सूरत' में बहुत ही ज्यादा परिवर्तन और विकास हुए हैं। पहले यह एक छोटा सा शहर था और गंदगी का वास रहता था, पर आज इसका क्षेत्र पूरी तरह से फैल चुका है। यहां के बाजार बढ़ चुके हैं और साफ-सफाई की दृष्टि में यह भारत के प्रमुख शहरों में से एक है। आज हमारा सूरत एक महानगर बन चुका है। लंबी-लंबी सड़कें व कई फ्लाईओवर बन चुके हैं। यहां का इंफ्रास्ट्रक्चर भी बहुत तेजी से विकास हुआ है। पहले दो गाड़ियां आमने-सामने हो जाए तो निकलना मुश्किल हो जाता था, पर आज यही रास्ता चार या छह लेन से कम नहीं है। रिंग रोड मार्केट भी बहुत बड़ा बन चुका है यहां बी आर टी एस बस के लिए भी अलग रास्ते बने हैं। बड़ी-बड़ी बिल्डिंग्स बन चुकी हैं। लोगों के रहन-सहन का स्तर भी ऊंचा उठा है। उद्योग जगत की बात की जाए तो डायमंड और कपड़ा उद्योग तो 'सूरत' में हमेशा से ही रहा है और आज इसका विकास बहुत तेजी से हुआ है। यहां नई-नई तकनीकों का उपयोग किया जाता है, जिससे दिन-प्रतिदिन विकास बढ़ रहा है। 'सूरत' में भारत के सभी क्षेत्रों के लोग बसे हैं, इसीलिए यहां का सामाजिक वातावरण भी बहुत ही सौहार्दपूर्ण व मिलनसार है। लोग एक-दूसरे के साथ भाई-चारे के साथ निवास करते हैं, क्योंकि सभी व्यापार व रोजगार से जुड़े हैं। यहां की संस्कृति ही निराली है, हर धर्म और समाज के लोग यहां नजर आते हैं। यहां के खानपान की बात की जाए तो 'सूरत नो जमण काशीनो मरण' यह कहावत यहां की प्रसिद्ध है। यहां हर प्रकार की वैरायटी के भोजन उपलब्ध हो जाते हैं, यहां स्ट्रीट फूड चलन अधिक है, रविवार के दिन लोग घर में खाना नहीं बनाते, साथ यहां के लोग खाने के भी बड़े शौकीन होते हैं। यहां के प्रमुख स्थलों में अंबाजी का मंदिर, चौक बाजार का पुराना किला, दुम्मस बीच विशेष रूप से उल्लेखनीय है, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है, कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही होना चाहिए, हमारे आचार्य श्री विद्यासागर जी ने भी इसका आव्हान किया है कि इंडिया नहीं 'भारत' बोलो क्योंकि इंडिया शब्द का कोई अर्थ नहीं होता। भारत ही हमारे देश का प्राचीन और गौरवान्वित नाम है, अतः अपने देश की पहचान सिर्फ 'भारत' से ही रहानी चाहिए।

राजीव जी मूलतः उत्तर प्रदेश स्थित 'हाथरस' के निवासी हैं जो आपकी जन्मभूमि है, आपकी संपूर्ण शिक्षा दिल्ली में संपन्न हुई है। पिछले ३८ वर्षों से आप 'सूरत' में बसे हुए हैं और टेक्सटाइल उद्योग से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी बढ़-चढ़कर सहभागी होते हैं। 'सूरत' स्थित श्री दिगम्बर जैन खंडेलवाल समाज के अध्यक्ष पद पर सेवारत हैं, अन्य कई संस्थान से भी जुड़े हैं। जय भारत!

यदि बढ़ाना है देश को विकास की ओर, तो दें हिंदी भाषा पर जोर-बिजय कुमार जैन

सागरमल दोशी
व्यवसायी व समाजसेवी
बांसवाड़ा निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९२२८२२२१००

सागरमल जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'सूरत' का विकास पिछले कुछ वर्षों में बहुत तेजी से हुआ है, यहां कपड़ा व्यापार तो पहले से ही था और आज इसकी प्रगति और तेजी से बढ़ रही है। यहां डायमंड उद्योग भी बड़े पैमाने पर है, साथ ही बहुत तेजी से बढ़ रहा है, इसीलिए सूरत स्मार्ट सिटी के रूप में जाना जाता है, यहां कपड़ा व डायमंड उद्योग के साथ अन्य सेक्टर का भी विकास हो रहा है, आयटी क्षेत्र का डेवलपमेंट भी हुआ है, पहले यहां की सड़कें बहुत संकरी व छोटी हुआ करती थी। आज लंबी-लंबी व चौड़ी सड़कें बन चुकी हैं। आज मल्टी स्टोरेज बिल्डिंग भी बन चुकी है, जब मैं यहां आया था तो यहां एक जगह पर लिखा हुआ था 'सूरत का पैसा सूरत में हीं अर्थात सूरत में रोजगार व व्यापार के लिए आने वाले लोग अपनी आमदनी अपने विकास में ही खर्च करते हैं इसीलिए आज यहां जो भी बसा है उनका जीवन स्तर भी ऊंचा हुआ है। औद्योगिक नगरी होने के कारण यहां राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार, ओडिशा, महाराष्ट्र व अन्य राज्यों के लोग भी बसे हुए हैं, यहां का सामाजिक व धार्मिक वातावरण बहुत ही उत्तम है, यहां मिली-जुली संस्कृति दिखाई देती है, हर तरह के भोजन आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि यह तो होना ही चाहिए पर यह लोगों की विचारों व सोच पर भी निर्भर करता है, हमारे देश का मूल नाम 'भारत' है और 'भारत' ही रहना चाहिए। जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के जेष्ठ पूत्र भरत के नाम से इस देश का नाम भारत रखा गया। ऐसी ही अन्य कई उल्लेख मिलते है। इसलिए अपने देश का प्राचीन और ऐतिहासिक नाम भारत ही है।

सागरमलजी मूलतः राजस्थान स्थित बांसवाड़ा के निवासी हैं। आपका जन्म और हायर सेकेंडरी तक की शिक्षा 'बांसवाड़ा' में ही संपन्न हुई है। तत्पश्चात एलएलबी की शिक्षा आपने मध्य प्रदेश के रतलाम से ग्रहण की। चार सालों तक दिल्ली में बसे, तत्पश्चात पिछले २० वर्षों से आप 'सूरत' में बसे हुए हैं और कंप्यूटर व्यवसाय से जुड़े हैं। आपके पुत्र आयटी सेक्टर व वेब डिजाइनर के रूप में कार्यरत हैं। आप सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। सूरत स्थित आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर के सदस्य हैं। जय भारत!

इंदिरा साबू
अध्यक्ष श्री माहेश्वरी महिला मंडल सूरत
सीकर निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९३७४९६२५४०

इंदिरा जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहती हैं कि 'सूरत' एक बहुत ही सुंदर और स्वच्छ शहर है और इसके विकास में यहां के निवासियों, प्रवासियों व सरकार की अहम भूमिका है। सभी का योगदान सूरत के विकास में बहुत ही महत्वपूर्ण है। सूरत में मेट्रो का भी काम बड़ी तेज गति से चल रहा है जो आने वाले दो-तीन सालों में पूरी तरह से शुरू हो जाएगा। यहां इंटरनेशनल एयरपोर्ट भी बनने जा रहा है क्योंकि यहां डायमंड बुर्स बन रहा है, जो भारत में कहीं नहीं है, इसीलिए देश के साथ-साथ विदेशियों का भी यहां आना जाना होगा, इसलिए सरकार इस दिशा में विशेष प्रयास कर रही है, इसे मिनी सिंगापुर कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी, क्योंकि यहां की बसावट, रंग-रोगन, सुविधाएं सिंगापुर की तुलना करता है। यह टेक्सटाइल और डायमंड सिटी के लिए पूरे 'भारत' में विख्यात है, औद्योगिक क्षेत्र होने के कारण यहां 'भारत' के सभी क्षेत्र से लोग बसे हैं, सभी के बीच आपसी सामंजस्य बहुत ही उत्तम है। आपसी मेल-मिलाप बहुत ही उत्तम है, यहां हर समाज की सामाजिक संस्थाएं कार्यरत हैं, साथ ही इन संस्थाओं में महिला वर्ग की भी कई संस्थाएं कार्यरत हैं। महिलाओं द्वारा अपनी संस्कृति व संस्कारों को मजबूत बनाने के लिए हम-सभी ही तत्पर रहती हैं, साथ ही सामाजिक क्षेत्र व कार्यों में भी यहां की महिलाएं विशेष रूप से कार्यरत हैं। 'सूरत' की सुंदरता की बात की जाए तो यहां वाटर पार्क, दुम्मस बीच जो टूरिस्ट प्लेस बनने जा रहा है, मछली घर, प्राणी संग्रहालय, उद्यान बहुत ही सुंदर बने हुए हैं, जहां लोग जाना पसंद करते हैं, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहती हैं कि 'भारत' शब्द अपने आप में परिपूर्ण व समृद्ध है, इसे और किसी नाम की जरूरत नहीं है अतः अपने देश का एक ही नाम होना चाहिए 'भारत', जो हमारी संस्कृति व इतिहास से जुड़ा हुआ है।

इंदिरा जी मूलतः राजस्थान स्थित 'जयपुर' की निवासी हैं। आपका जन्म जयपुर में व संपूर्ण शिक्षा वनस्थली विद्यापीठ राजस्थान में संपन्न हुई है, जो राजस्थान के प्रसिद्ध शैक्षणिक संस्थाओं में से एक है। आपका ससुराल पक्ष सीकर स्थित 'बावड़ी' का निवासी है। १९९० से आप 'सूरत' में बसी हुई हैं और हमेशा से ही सामाजिक कार्यों में अग्रसर रही हैं। वर्तमान में श्री माहेश्वरी महिला मंडल सूरत के अध्यक्षा पद पर अपनी भूमिका निभा रही हैं। जय भारत!

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाना चाहिए

पधारो म्हारे देश

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

मेरा राजस्थान

सम्पादक : विजय कुमार जैन

राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

राजस्थान का इतिहास पहुँचाए आपके हाथ

मात्र रु. १००/- में, प्रति महिना

सम्पादक

बिजय कुमार जैन

उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'

कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)

पंजीकृत कार्यालय

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरध्वनि: ०२२-२८५० ९९९९ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com

विशेष छूट

विज्ञापन देने पर पूरे साल 'मेरा राजस्थान' पत्रिका मुफ्त

वार्षिक शुल्क १,१११/-
आजीवन शुल्क ११,१११/-

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

नीम लगायें पर्यावरण बचाये

Postal Registration Number - MCN/294/2021-2023
WPP License No. MR/Tech/WPP-354/North/2021-23
Published on 19th December 2022 & Posting on 20th of Every Month
Posted at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059.

भारत को 'भारत' ही बोलें इंडिया नहीं

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

मैं भारत हूँ

भारतीय सांस्कृतिक, सामाजिक, राष्ट्रीयता, ऐतिहासिक भावना को प्रेषित करती पत्रिका

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

मात्र रु. १००/- में, प्रति महिना आपके द्वार

भारत का इतिहास पहुँचाए आपके हाथ

विशेष छूट
विज्ञापन देने पर पूरे साल मैं भारत हूँ पत्रिका मुफ्त

पंजीकृत कार्यालय
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल,
अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९.
दूरभाष- ०२२-२८५० ९९९९
अणु डाक: mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना: www.mainbharathun.co.in

आगे भी हर महिने

सम्पादक
बिजय कुमार जैन

उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'

कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
Remove India Name From the Constitution

नीम लगायें पर्यावरण बचाये
India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड व संपादक, मुद्रक व प्रकाशक बिजय कुमार जैन, बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059 से मुद्रित करवा कर बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400 059 से प्रकाशित किया गया, टेलीफैक्स-०२२-२८५० ९९९९, अणुडाक-mailgaylordgroup@gmail.com, अन्तरताना - www.mainbharathun.co.in,
द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400093 से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया गया।
RNI No. MAHHIN/2010/48574